

अध्याय 1

समाजशास्त्र एवं समाज

(Sociology and Society)

1. परिचय (Introduction)

मानव जीवन में व्यक्तिगत प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, परंतु कोई भी व्यक्ति पृथक्ता में कार्य नहीं करता। हमारे निर्णय, सफलताएँ और असफलताएँ उन सामाजिक कारकों द्वारा गहराई से प्रभावित होती हैं जो हमारे आसपास मौजूद होते हैं।

- उदाहरण (विषय चुनाव व नौकरी):** जब किसी युवा को सलाह दी जाती है कि "मेहनत करोगे तो सफलता मिलेगी", तो यह व्यक्तिगत प्रयास पर बल देता है। परंतु "कौन सा विषय चुनने पर नौकरी मिलेगी" या "परिवार की स्थिति और लिंग (Gender) के अनुसार क्या सही है", यह दर्शाते हैं कि व्यक्तिगत प्रयास के अलावा **नौकरी का बाज़ार, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, परिवार और लिंग** जैसे सामाजिक कारक भी निर्णायक भूमिका निभाते हैं।
- समाजशास्त्र का मूल कार्य:** समाजशास्त्र का प्राथमिक कार्य व्यक्तिगत समस्याओं और जनहित के मुद्दों के बीच के अंतर व संबंध को स्पष्ट करना है। यह मानव समाज का एक अंतःसंबंधित समग्र (Interconnected whole) के रूप में अध्ययन करता है।

2. समाजशास्त्रीय कल्पनाएँ: व्यक्तिगत समस्याएँ एवं जनहित के मुद्दे

अमेरिकी समाजशास्त्री सी. राइट मिल्स (C. Wright Mills, 1959) ने समाजशास्त्रीय दृष्टि को समझने के लिए "समाजशास्त्रीय कल्पना" (Sociological Imagination) की अवधारणा प्रस्तुत की।

राइट मिल्स का विभाजन

व्यक्तिगत समस्याएँ (Personal Troubles)

- व्यक्ति के निजी जीवन व सीमित दायरे तक।
- व्यक्तिगत असफलताओं या कमियों का परिणाम।

जनहित के मुद्दे (Public Issues)

- सामाजिक संरचना और संस्थाओं से जुड़े।
- संपूर्ण समाज, अर्थव्यवस्था या नीतियों का परिणाम।

(क) परिचय एवं अवधारणा:

- **व्यक्तिगत समस्याएँ (Personal Troubles):** ये वे कठिनाइयाँ हैं जो किसी व्यक्ति के प्रत्यक्ष निजी जीवन, उसके चरित्र और उसके तात्कालिक सामाजिक दायरे तक सीमित होती हैं।
- **जनहित के मुद्दे (Public Issues):** ये वे मामले हैं जिनका संबंध व्यक्ति के निजी जीवन से परे संपूर्ण सामाजिक संरचना, ऐतिहासिक प्रक्रियाओं और संस्थागत व्यवस्थाओं से होता है।

(ख) दोनों में अंतर :

तुलना का आधार	व्यक्तिगत समस्याएँ (Personal Troubles)	जनहित के मुद्दे (Public Issues)
क्षेत्र एवं दायरा	व्यक्ति के निजी जीवन और स्थानीय वातावरण तक सीमित।	संपूर्ण समाज, सामाजिक संरचना और संस्थाओं तक फैला।
कारण	व्यक्तिगत निर्णय, असफलता या सीमित क्षमता।	आर्थिक मंदी, नीतियाँ, बेरोजगारी, युद्ध या संरचनात्मक बदलाव।
समाधान का तरीका	व्यक्तिगत सुधार या स्थानीय स्तर पर समाधान।	नीतिगत बदलाव, सरकारी योजनाएँ (जैसे—प्रधानमंत्री आवास योजना)।
व्यावहारिक उदाहरण	किसी एक व्यक्ति का काम चोरी के कारण नौकरी खोना।	देश में आर्थिक मंदी या तकनीकी बदलाव के कारण लाखों लोगों का बेरोजगार होना।
गृहविहीनता का उदाहरण	एक परिवार का आलस्य या बीमारी के कारण बेघर होना।	आवास की कमी, ग्रामीण-शहरी प्रवास, या गरीबी जैसी संरचनात्मक समस्या।

3. समाजों में बहुलताएँ एवं असमानताएँ (Pluralities and Inequalities in Societies)

समकालीन विश्व में एक व्यक्ति एक से अधिक समाजों और सामाजिक पहचानों से जुड़ा होता है। जब हम 'हमारा समाज' कहते हैं, तो इसका अर्थ राष्ट्र (भारतीय समाज), भाषा, धर्म, जाति, या क्षेत्रीय समुदाय हो सकता है।

(क) समाज के चित्रण पर विविधता (सत्यजित राय का दृष्टिकोण):

मशहूर भारतीय फिल्मकार सत्यजित राय ने समाज के चित्रण में मौजूद विरोधाभासों पर कहा था:

"आप अपनी फिल्मों में क्या रखेंगे? क्या आप शहर को छोड़कर गाँव जाएँगे जहाँ विशाल चारागाहों में गायें चरती हैं और चरवाहे बाँसुरी बजाते हैं? या आप इतिहास के महाकाव्यों में जाएँगे जहाँ देवों और दैत्यों ने संग्राम किया था? अथवा आप वहीं ठहरे रहेंगे जहाँ आप हैं—इस भीड़भाड़ और चकाचौंध भरे शहर के बीचों-बीच?"

(ख) असमानता का यथार्थ (अमर्त्य सेन एवं आनुभविक साक्ष्य):

नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन (2005) के अनुसार असमानता समाजों का केंद्रीय बिंदु है:

- "कुछ भारतीय अमीर हैं, अधिकांश नहीं हैं। कुछ बहुत अच्छी तरह शिक्षित हैं; अन्य निरक्षर हैं। कुछ विलासिता की जिंदगी बसर करते हैं, जबकि दूसरे थोड़े से पारिश्रमिक के बदले कठोर परिश्रम करते हैं।"
- **जेम्स फ्रीमैन (1978) का आनुभविक चित्रण:** 'मुली' नाम के 40 वर्षीय अछूत व्यक्ति का वर्णन, जो चाय की दुकान के सामने सड़क पर दूर बैठकर मूक संकेत से चाय का इंतजार करता था, यह दर्शाता है कि समाज में जाति और असमानता कितनी गहरी है।

4. समाजशास्त्र का परिचय

- **परिभाषा:** समाजशास्त्र (Sociology) मनुष्य के सामाजिक जीवन, समूहों, संस्थाओं और समाजों का वैज्ञानिक एवं आनुभविक अध्ययन है।
- **दार्शनिक चिंतन से भिन्नता:** दार्शनिक और धार्मिक विचार यह बताते हैं कि समाज में क्या 'होना चाहिए' (नैतिकता व आदर्श), जबकि समाजशास्त्र यह अध्ययन करता है कि वास्तविक समाज में वास्तव में क्या 'है' (आनुभविक यथार्थ)।
- **जासूस की सादृश्यता (पीटर बर्जर, 1963):** पीटर बर्जर के अनुसार, समाजशास्त्री एक जासूस की तरह होता है। जिस प्रकार एक कुशल जासूस का काम बिना किसी निजी पूर्वाग्रह के शुद्ध और वस्तुनिष्ठ रिपोर्ट तैयार करना है, उसी प्रकार समाजशास्त्री समाज का पूर्वाग्रह-मुक्त अध्ययन करता है।
- **वैज्ञानिक कार्यविधि:** समाजशास्त्र में साक्ष्य (Evidence) प्राप्त करने के निश्चित नियमों और पद्धतियों का पालन किया जाता है ताकि निष्कर्षों की पुनरावृत्ति और जाँच की जा सके।

5. समाजशास्त्र और सामान्य बौद्धिक ज्ञान (Sociology and Common Sense Knowledge) में

सामान्य बौद्धिक ज्ञान (Common Sense) हमारे रोजमर्रा के अनुभवों और अनपरीक्षित धारणाओं पर आधारित होता है। यह स्वयं से प्रश्न नहीं पूछता कि "मैं यह विचार क्यों रखता हूँ?" इसके विपरीत, समाजशास्त्र व्यवस्थित, परावर्तनीय और प्रश्नकारी वैज्ञानिक पद्धतियों पर आधारित है।

(क) सामान्य समझ vs समाजशास्त्रीय व्याख्या:

पक्ष	सामान्य बौद्धिक ज्ञान (Common Sense)	समाजशास्त्रीय ज्ञान (Sociological Knowledge)
आधार	अनपरीक्षित धारणाएँ, व्यक्तिगत अनुभव व परंपराएँ।	व्यवस्थित आनुभविक आँकड़े, प्रमाण और सिद्धांत।
दृष्टिकोण	प्रकृतिवादी (Naturalistic) और व्यक्तिवादी (Individualistic)।	संरचनात्मक (Structural) और संस्थागत।
प्रकृति	अपरावर्तनीय (अपने मूल पर प्रश्न नहीं उठाता)।	परावर्तनीय (निरंतर प्रश्नों और साक्ष्यों की जाँच करता है)।

(ख) गरीबी की प्रकृतिवादी और समाजशास्त्रीय परिकल्पना में अंतर:

विषय	प्रकृतिवादी परिकल्पना (Naturalistic View)	समाजशास्त्रीय परिकल्पना (Sociological View)
गरीबी की परिभाषा/कारण	लोग गरीब इसलिए हैं क्योंकि वे काम से जी चुराते हैं, बुद्धिमत्ता की कमी है, परिवार का बजट नहीं बना पाते या समस्याग्रस्त परिवारों से आते हैं।	गरीबी का मुख्य कारण वर्ग समाज में असमानता की संरचना है। यह कार्य की अनियमितता, कम मजदूरी, संसाधनों के असमान वितरण और शोषण का परिणाम है।

(ग) अवांछित परिणाम (Unintended Consequences) का उदाहरण:

- कारगिल युद्ध के बाद भारत सरकार ने निर्णय लिया कि मृतक सैनिकों की क्षतिपूर्ति राशि उनकी विधवाओं को दी जाएगी।
- अवांछित परिणाम:** क्षतिपूर्ति राशि को परिवार में बनाए रखने के लिए कई परिवारों ने विधवाओं को उनके देवरों (जो कभी-कभी अल्पवयस्क थे) से विवाह करने के लिए मजबूर किया। समाजशास्त्र ऐसे अवांछित सामाजिक परिणामों का अध्ययन करता है।

6. बौद्धिक विचार जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है

19वीं शताब्दी में यूरोप में समाजशास्त्र के जन्म में कई बौद्धिक विचारों का गहरा प्रभाव रहा:

1. मानव समाजों का वर्गीकरण:

- प्राग-आधुनिक समाज:** शिकारी-संग्रहकर्ता, चरवाहे, कृषक और गैर-औद्योगिक सभ्यताएँ।
- आधुनिक समाज:** औद्योगिक समाज।

2. जैविक विकासवाद (डार्विन का प्रभाव):

- हरबर्ट स्पेंसर और प्रारंभिक समाजशास्त्रियों ने समाज की तुलना एक जीवित जीव (Biological Organism) से की।
- यह माना गया कि समाज भी सरल अवस्था से विकसित होकर जटिल अवस्था में पहुँचता है और इसके विभिन्न अंग (परिवार, शिक्षा आदि) विशिष्ट कार्य करते हैं।

3. ज्ञानोदय (The Enlightenment):

- 17वीं-18वीं शताब्दी का यूरोपीय आंदोलन जिसने **तर्क (Reason)** और **व्यक्तिवाद** पर बल दिया।
- इसके प्रभाव से गरीबी या सामाजिक समस्याओं को 'दैवीय प्रकोप' या 'प्राकृतिक' न मानकर **सामाजिक समस्या** के रूप में देखा जाने लगा जिसका वैज्ञानिक अध्ययन और निवारण संभव है।

4. ऑगस्ट कॉम्टे (Auguste Comte, [1789-1857](#)):

इन्हें समाजशास्त्र का संस्थापक माना जाता है। इनका विश्वास था कि समाजशास्त्र प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा मानव कल्याण में योगदान करेगा।

7. भौतिक मुद्दे जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है

समाजशास्त्र का उद्भव औद्योगिक क्रांति और पूँजीवाद (Capitalism) के विकास जैसी भौतिक स्थितियों का परिणाम था।

(क) औद्योगिक क्रांति और पूँजीवाद:

- पूँजीवादी व्यवस्था:** उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व, व्यवस्थित मुनाफे की आशा, और बाजार में वस्तुओं व श्रम का क्रय-विक्रय।
- उत्पादन का स्थान बदला:** कार्य घर और कुटीर उद्योगों से निकलकर कारखानों (Factories) में केंद्रित हो गया।

(ख) नगरीकरण एवं गंदी बस्तियों का विस्तार:

- ग्रामीण आबादी का तेजी से शहरों की ओर पलायन हुआ।

- औद्योगिक नगरों में फैक्ट्रियों का धुआँ, भीड़भाड़ वाली गंदी बस्तियाँ (Slums), और मानवीय संवेदनहीनता बढ़ी।
- हिंदी फिल्म 'सी.आई.डी.' (1956) का गीत: "ऐ दिल है मुश्किल जीना यहाँ, ज़रा हट के ज़रा बच के, ये है बॉम्बे मेरी जान... मिलता है यहाँ सब कुछ, इक मिलता नहीं दिल।" यह पंक्तियाँ शहरी जीवन के अजनबीपन और संवेदनहीनता को दर्शाती हैं।

(ग) घड़ी के अनुसार समय (Clock-Time) का महत्व:

- औद्योगिक पूँजीवाद से पहले कार्य की लय दिन के उजाले, मौसम और सामाजिक कर्तव्यों के अनुसार तय होती थी।
- कारखानों के आने से श्रम समकालिक हो गया। "समय अब धन है" (Time is Money)—समय की पाबंदी, निश्चित घंटे और हफ़्ते के दिन तय हो गए।

(घ) दास व्यापार और बंधुआ मजदूरी:

- पूँजीवाद के वैश्विक विस्तार के लिए 17वीं-19वीं शताब्दी में 24 मिलियन अफ्रीकियों को दास बनाया गया।
- 1800 के बाद भारत से लाखों बंधुआ मजदूरों (Indentured Labourers) को फिजी, मॉरीशस, वेस्टइंडीज और सूरीनाम ले जाया गया (जैसा कि वी.एस. नायपॉल के पूर्वजों के साथ हुआ)।

8. हमें यूरोप में समाजशास्त्र के आरंभ और विकास को क्यों पढ़ना चाहिए?

- ऐतिहासिक संबंध: भारतीय होने के नाते हमारा अतीत ब्रिटिश पूँजीवाद और औपनिवेशीकरण के इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है।
- वैश्विक प्रभाव: यूरोप में औद्योगिकीकरण और पूँजीवाद के कारण जो सामाजिक परिवर्तन (जैसे—नगरीकरण, कारखाना उत्पादन, श्रम विभाजन) शुरू हुए, उनका प्रभाव औपनिवेशिक व्यवस्था के माध्यम से भारत पर भी पड़ा।
- कार्ल मार्क्स की टिप्पणी: मार्क्स ने उल्लेख किया था कि कैसे ब्रिटेन की सूती मिलों के सस्ते धागों और कपड़ों ने भारत के पारंपरिक वस्त्र उद्योग और दस्तकारों को तबाह कर दिया, जिससे दस्तकार भूमिहीन किसान बनने पर मजबूर हुए।

9. भारत में समाजशास्त्र का विकास

- औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य पर सवाल: पाश्चात्य विद्वानों और औपनिवेशिक अधिकारियों ने भारतीय गाँव को 'अपरिवर्तनीय' और समाज की 'शैशवावस्था' (अवशेष) के रूप में चित्रित किया था, जिसे भारतीय समाजशास्त्रियों ने चुनौती दी।
- 'दूसरे' (The 'Other') की अवधारणा (एम.एन. श्रीनिवास):

- पश्चिम में समाजशास्त्र औद्योगिकृत समाजों का अध्ययन करता था और सामाजिक मानवविज्ञान 'दूसरी' (गैर-पश्चिमी/आदिम) संस्कृतियों का अध्ययन करता था।
- **एम.एन. श्रीनिवास (1966)** के अनुसार, भारत में अपनी विशाल विविधता (क्षेत्र, भाषा, धर्म, जाति) के कारण 'दूसरा' व्यक्ति हमारे पड़ोस में ही मिल जाता है।
- **विभाजक रेखा का न होना:** भारत में समाजशास्त्र (Sociology) और सामाजिक मानवविज्ञान (Social Anthropology) के बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं है। यहाँ दोनों विषय ग्रामीण, जनजातीय, और आधुनिक औद्योगिक समाजों का एक साथ अध्ययन करते हैं।

10. समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों से इसके संबंध

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र अत्यंत व्यापक है—यह दो मित्रों के बीच की अंतःक्रिया से लेकर वैश्विक श्रम कानूनों या बेरोजगारी जैसे राष्ट्रीय मुद्दों तक का अध्ययन करता है।

(क) अन्य विषयों से संबंध (विस्तृत विवरण):

1. समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र:

- **अंतर:** अर्थशास्त्र वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन, वितरण, मूल्य, माँग व आपूर्ति का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र आर्थिक व्यवहार को सामाजिक मानदंडों, मूल्यों, वर्ग संबंधों और लिंगगत श्रम विभाजन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखता है।
- **पियरे बोरट्रू का विचार:** वास्तविक आर्थिक विज्ञान को केवल कॉर्पोरेट लागत नहीं, बल्कि अपराध, आत्महत्याओं और बेरोजगारी से जुड़ी सामाजिक लागतों का भी हिसाब रखना चाहिए।

2. समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान:

- **अंतर:** परंपरागत राजनीति विज्ञान शक्ति के औपचारिक संगठनों (सरकार, प्रशासन, राजनीतिक सिद्धांत) पर ध्यान केंद्रित करता है। समाजशास्त्र सरकार सहित समाज की सभी संस्थाओं के अंतर-संबंधों और वास्तविक राजनीतिक व्यवहार (जैसे—मतदान व्यवहार, राजनीति में जाति/लिंग की भूमिका) का अध्ययन करता है।

3. समाजशास्त्र एवं इतिहास:

- **अंतर:** इतिहासकार अतीत की ठोस वास्तविक घटनाओं और उनके कालक्रम का अध्ययन करते हैं। समाजशास्त्र समकालीन समय या निकट अतीत की ठोस वास्तविकताओं से सार निकालकर सामान्यीकरण (Generalization) और नियमों का निर्माण करता है।
- **सामाजिक इतिहास:** आजकल इतिहासकार भी समाजशास्त्रीय पद्धतियों को अपनाकर राजाओं के युद्धों के बजाय कृषक संबंधों और लिंग संबंधों का अध्ययन करने लगे हैं।

4. समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान:

- **अंतर:** मनोविज्ञान व्यक्तिगत व्यवहार, बुद्धि, प्रेरणा, स्मृति और तंत्रिका तंत्र का अध्ययन करता है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति पर केंद्रित रहकर समूह व्यवहार देखता है। समाजशास्त्र समाज में संगठित व्यवहार और सामाजिक संरचनाओं का अध्ययन करता है।
- **दुर्खाइम का आत्महत्या अध्ययन:** एमिल दुर्खाइम ने आत्महत्या जैसे व्यक्तिगत कृत्य का अध्ययन करते समय व्यक्तिगत मनोभावों को बाहर रखकर केवल सामाजिक सांख्यिकी और सामाजिक कारकों पर ध्यान केंद्रित किया।

5. समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवविज्ञान:

- अंतर: पारंपरिक रूप से समाजशास्त्र आधुनिक, जटिल और औद्योगिकृत समाजों का अध्ययन करता था (सर्वेक्षण व सांख्यिकी द्वारा)। सामाजिक मानवविज्ञान छोटे, सरल, निरक्षर और गैर-पश्चिमी समाजों का अध्ययन करता था (दीर्घकालिक क्षेत्रीय कार्य / Fieldwork द्वारा)। भारत में ये दोनों विषय आपस में मिले हुए हैं।

(ख) समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से तुलनात्मक अंतर :

1. समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र में अंतर (Sociology vs. Economics)

तुलना का आधार	समाजशास्त्र (Sociology)	अर्थशास्त्र (Economics)
अध्ययन का मुख्य केंद्र	सामाजिक संबंधों, संस्थाओं, समूहों और संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन।	वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग का अध्ययन।
दृष्टिकोण (Approach)	व्यापक, अंतःसंबंधित और आलोचनात्मक (Critical) दृष्टिकोण।	संकुचित, केंद्रित और तकनीकी/गणितीय (Technical) दृष्टिकोण।
मानव व्यवहार की अवधारणा	मनुष्य को एक 'सामाजिक प्राणी' मानता है जो मानदंडों व परंपराओं से बंधा है।	मनुष्य को एक 'आर्थिक मानव' (Rational Economic Man) मानकर तार्किक गणनाओं पर बल देता है।
सामाजिक लागत (Social Cost)	अपराध, आत्महत्या, बेरोजगारी और मानसिक तनाव जैसी सामाजिक लागतों का अध्ययन।	केवल निगमित निकायों और कंपनियों से संबंधित प्रत्यक्ष वित्तीय लागतों (Financial Costs) का अध्ययन।
अध्ययन की पद्धतियाँ	गुणात्मक व परिमाणात्मक दोनों (सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन)।	मुख्यतः परिमाणात्मक, सांख्यिकीय और गणितीय मॉडल।

2. समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान में अंतर (Sociology vs. Political Science)

तुलना का आधार	समाजशास्त्र (Sociology)	राजनीति विज्ञान (Political Science)
अध्ययन का दायरा	समाज की सभी संस्थाओं (परिवार, धर्म, अर्थव्यवस्था, सरकार) का अध्ययन।	केवल राजनीतिक संस्थाओं (राज्य, सरकार, प्रशासन, कानून) तक सीमित।
शक्ति (Power) की अवधारणा	शक्ति का अध्ययन व्यापक सामाजिक संदर्भों में करता है (परिवार, धर्म, जाति, लिंग में शक्ति)।	शक्ति का अध्ययन केवल राज्य के औपचारिक तंत्र और कानून के दायरे में करता है।
मुख्य सरोकार	वास्तविक सामाजिक व राजनीतिक व्यवहार (जैसे—मतदान में जाति/धर्म का प्रभाव)।	औपचारिक ढाँचा, संविधान, राजनीतिक सिद्धांत और प्रशासनिक प्रक्रियाएँ।
संस्थागत संबंध	सरकार को समाज की अनेक संस्थाओं में से केवल एक संस्था मानता है।	सरकार और राज्य को समाज की सर्वोच्च व प्राथमिक संस्था मानता है।
शाखा सम्मिश्रण	'राजनीतिक समाजशास्त्र' के रूप में राजनीति के सामाजिक आधार का अध्ययन करता है।	राजनीतिक सिद्धांतों और सरकारी नीतियों के निर्माण पर बल देता है।

3. समाजशास्त्र एवं इतिहास में अंतर (Sociology vs. History)

तुलना का आधार	समाजशास्त्र (Sociology)	इतिहास (History)
समय काल (Time Horizon)	मुख्य रूप से समकालीन समाज या निकट अतीत का अध्ययन करता है।	मुख्य रूप से सुदूर अतीत (Past) और बीते हुए समय का अध्ययन करता है।
घटनाओं की प्रकृति	ठोस वास्तविकताओं से सार निकालकर सामान्य नियम व पैटर्न (Generalization) बनाता है।	विशिष्ट, अद्वितीय (Unique) और ठोस ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण देता है।
पारंपरिक अध्ययन केंद्र	सामाजिक संरचना, वर्ग संबंध, प्रथाएँ और आम जनजीवन का अध्ययन।	राजा-महाराजाओं, युद्धों, संधियों, शासकों और राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन।
पद्धतिशास्त्र	प्रत्यक्ष आनुभविक अन्वेषण, सर्वेक्षण, साक्षात्कार और अवलोकन।	ऐतिहासिक दस्तावेजों, शिलालेखों, अभिलेखागारों और पुरातात्विक साक्ष्यों का विश्लेषण।
आधुनिक झुकाव	इतिहास के आंकड़ों का प्रयोग सामाजिक सिद्धांतों की पुष्टि हेतु करता है।	अब 'सामाजिक इतिहास' के रूप में समाजशास्त्रीय पद्धतियों को अपना रहा है।

4. समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान में अंतर (Sociology vs. Psychology)

तुलना का आधार	समाजशास्त्र (Sociology)	मनोविज्ञान (Psychology)
अध्ययन की इकाई (Unit)	समाज, समूह, संस्थाएँ और संगठित सामाजिक व्यवहार।	केवल 'व्यक्ति' (Individual) और उसका व्यक्तिगत मस्तिष्क/व्यवहार।
अध्ययन का विषय	सामाजिक संरचना, वर्ग, धर्म, नातेदारी, सामाजिक नियंत्रण व मानदंड।	बुद्धि, प्रेरणा, स्मृति, तंत्रिका तंत्र, संवेदनाएँ, डर और व्यक्तिगत सोच।
कारकों की खोज	व्यवहार के लिए बाह्य सामाजिक दबावों व बाध्यताओं (Social Constraints) को उत्तरदायी मानता है।	व्यवहार के लिए आंतरिक मानसिक, स्नायुविक व जैविक कारकों को उत्तरदायी मानता है।
दृष्टिकोण का उदाहरण (आत्महत्या)	दुर्खांड के अनुसार आत्महत्या सामाजिक सांख्यिकी व सामाजिक एकीकरण की कमी का परिणाम है।	मनोविज्ञान आत्महत्या को व्यक्ति की मानसिक निराशा, तनाव या डिप्रेशन का परिणाम मानता है।
मध्यस्थ शाखा	समाजशास्त्र सामाजिक संदर्भों में समूह व्यवहार का अध्ययन करता है।	'सामाजिक मनोविज्ञान' (Social Psychology) दोनों के बीच सेतु का कार्य करता है।

5. समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवविज्ञान में अंतर (Sociology vs. Social Anthropology)

तुलना का आधार	समाजशास्त्र (Sociology)	सामाजिक मानवविज्ञान (Social Anthropology)
समाजों का प्रकार	पारंपरिक रूप से आधुनिक, जटिल और औद्योगिक समाजों का अध्ययन।	पारंपरिक रूप से सरल, छोटे, निरक्षर, जनजातीय व गैर-पश्चिमी समाजों का अध्ययन।
शोध पद्धति	सर्वेक्षण, सांख्यिकीय आंकड़े, प्रश्नावली और परिमाणात्मक तकनीकें।	दीर्घकालिक क्षेत्रीय कार्य (Fieldwork), सहभागी अवलोकन (Participant Observation)।
अध्ययन का दायरा	समाज के विशिष्ट भागों या प्रक्रियाओं (जैसे नौकरशाही, सामाजिक गतिशीलता) पर ध्यान।	पूरे समुदाय या संस्कृति का एक 'समग्र' (Holistic Whole) के रूप में अध्ययन।
'दूसरे' का दृष्टिकोण	शोधकर्ता उसी समाज का हिस्सा होकर अध्ययन करता है।	शोधकर्ता 'दूसरी' (विजातीय/आदिम) संस्कृति का अध्ययन करने जाता था।
भारतीय संदर्भ में स्थिति	भारत में दोनों के बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं है; दोनों मिलकर अध्ययन करते हैं।	भारत में विशाल विविधता के कारण दोनों विषय आपस में पूरी तरह एकीकृत हैं।

11. शब्दावली (Glossary)

1. **पूँजीवाद (Capitalism):** आर्थिक उद्यम की एक ऐसी व्यवस्था जो बाजार विनियम पर आधारित है। इसमें धन, भवन और मशीनों जैसी परिसंपत्तियों पर निजी स्वामित्व होता है और वस्तुओं का उत्पादन बाजार में लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है।
2. **द्वंद्वात्मक (Dialectical):** सामाजिक ताकतों के परस्पर विरोध की क्रिया या उनकी विद्यमानता (जैसे सामाजिक बाध्यता और व्यक्तिगत इच्छा का टकराव)।
3. **आनुभविक अन्वेषण (Empirical Investigation):** समाजशास्त्रीय अध्ययन के किसी निश्चित क्षेत्र में की जाने वाली तथ्यपरक और प्रत्यक्ष जाँच-पड़ताल।
4. **नारीवादी सिद्धांत (Feminist Theory):** एक ऐसा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण जो सामाजिक विश्लेषण में लिंग (Gender) की महत्ता को केंद्र में रखता है तथा लिंग आधारित असमानता की व्याख्या और उसे दूर करने का प्रयास करता है।
5. **सामाजिक बाध्यता (Social Constraint):** यह इस तथ्य को दर्शाता है कि हम जिन समूहों और समाजों के हिस्से हैं, वे हमारे व्यवहार पर सीमाएँ और अनुकूलता का दबाव डालते हैं।
6. **मूल्य (Values):** व्यक्तियों या समूहों द्वारा माना जाने वाला वह विचार कि क्या जरूरी, सही, अच्छा या बुरा है।

अभ्यास प्रश्न और उनके विस्तृत उत्तर (Exercise Questions & Answers)

प्रश्न 1: समाजशास्त्र के उद्गम और विकास का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: समाजशास्त्र के उद्गम और विकास का अध्ययन निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:

1. **ऐतिहासिक संदर्भ की समझ:** समाजशास्त्र का जन्म 19वीं शताब्दी के यूरोप में ज्ञानोदय, औद्योगिक क्रांति और पूँजीवाद के विकास जैसी ऐतिहासिक घटनाओं के परिणामस्वरूप हुआ। इन घटनाओं ने समाज में जो परिवर्तन (जैसे नगरीकरण, कारखाना प्रणाली, गंदी बस्तियाँ) पैदा किए, उन्हें समझने के लिए समाजशास्त्र का जन्म हुआ।
2. **औपनिवेशिक अतीत से जुड़ाव:** भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास ब्रिटिश पूँजीवाद और उपनिवेशवाद से गहराई से जुड़ा है। यूरोप में हुए बदलावों का सीधा असर भारतीय समाज और उसकी पारंपरिक व्यवस्था (जैसे दस्तकारी का विनाश) पर पड़ा।
3. **विषय की जीवनी:** जिस प्रकार किसी व्यक्ति को समझने के लिए उसके अतीत को जानना आवश्यक है, उसी प्रकार समाजशास्त्र की अवधारणाओं, पद्धतियों और सरोकारों को समझने के लिए इसके इतिहास का अध्ययन आवश्यक है।

प्रश्न 2: 'समाज' शब्द के विभिन्न पक्षों की चर्चा कीजिए। यह आपके सामान्य बौद्धिक ज्ञान की समझ से किस प्रकार अलग है?

उत्तर:

- **'समाज' शब्द के विभिन्न पक्ष:**

1. **व्यापक राष्ट्रीय पक्ष:** जब हम विदेशियों के बीच बात करते हैं तो समाज का अर्थ 'भारतीय समाज' होता है।
2. **आंतरिक बहुलतावादी पक्ष:** देश के भीतर 'समाज' का अर्थ भाषा, धर्म, जाति, जनजाति या क्षेत्रीय समुदाय के आधार पर अलग-अलग समूहों से होता है।
3. **असमानता का पक्ष:** समाज में अमीर-गरीब, शक्तिशाली-अधिकारविहीन, शिक्षित-निरक्षर जैसी गहरी असमानतियाँ पाई जाती हैं।

- **सामान्य बौद्धिक ज्ञान से भिन्नता:**

- **सामान्य समझ:** सामान्य बौद्धिक ज्ञान समाज को प्रकृतिवादी (Naturalistic) या व्यक्तिवादी रूप में देखता है (जैसे गरीब अपनी नालायकी के कारण गरीब हैं) और अपने विचारों के मूल पर प्रश्न नहीं उठाता।
- **समाजशास्त्रीय समझ:** समाजशास्त्र समाज का आनुभविक, परावर्तनीय और वैज्ञानिक अध्ययन करता है। यह व्यक्तिगत समस्याओं को सामाजिक संरचना और नीतियों (जनहित के मुद्दों) से जोड़कर देखता है।

प्रश्न 3: चर्चा कीजिए कि आजकल अलग-अलग विषयों में परस्पर लेन-देन कितना ज्यादा है।

उत्तर: समकालीन समय में ज्ञान का दायरा इतना व्यापक और जटिल हो गया है कि सामाजिक विज्ञानों के बीच की पारंपरिक सीमाएँ धुंधली हो गई हैं और उनके बीच अंतर-विषयक (Interdisciplinary) लेन-देन अत्यधिक बढ़ गया है:

1. **समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र:** अर्थशास्त्री अब केवल बाजार के आंकड़ों पर ध्यान न देकर लिंगगत श्रम विभाजन, उपभोग की जीवन-शैली (विज्ञापन का प्रभाव) और सामाजिक लागतों (पियरे बोरट्रू का विचार) का अध्ययन कर रहे हैं।
2. **समाजशास्त्र और इतिहास:** इतिहासकार अब केवल युद्धों और राजाओं के बजाय 'सामाजिक इतिहास' लिख रहे हैं, जिसमें परिवार, प्रथाओं, कपड़ों, वास्तुकला और लिंग संबंधों का अध्ययन समाजशास्त्रीय पद्धतियों से किया जा रहा है।
3. **समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान:** 'राजनीतिक समाजशास्त्र' के माध्यम से चुनाव में मतदान के पैटर्न, जाति व लिंग की भूमिका और राजनीतिक दलों के सामाजिक आधार का अध्ययन दोनों विषय मिलकर कर रहे हैं।
4. **समाजशास्त्र और मानवविज्ञान:** भारत जैसे विकासशील देश में ग्रामीण, जनजातीय और शहरी औद्योगिक समाजों के अध्ययन के लिए दोनों विषयों की पद्धतियों (सर्वेक्षण और क्षेत्रीय कार्य) का साझा प्रयोग किया जा रहा है।

प्रश्न 4: अपनी या अपने दोस्त अथवा रिश्तेदार की किसी व्यक्तिगत समस्या को चिह्नित कीजिए। इसे समाजशास्त्रीय समझ द्वारा जानने की कोशिश कीजिए।

उत्तर:

- **व्यक्तिगत समस्या का चिह्नीकरण:** मेरे एक मित्र के बड़े भाई ने हाल ही में इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की, परंतु पिछले एक साल से कठिन प्रयास के बावजूद उन्हें कोई उपयुक्त नौकरी नहीं मिल पा रही है। परिवार में इसे

उनकी "व्यक्तिगत असफलता या पर्याप्त मेहनत न करना" माना जा रहा है, जिससे वे मानसिक तनाव का सामना कर रहे हैं।

- **समाजशास्त्रीय समझ (सी. राइट मिल्स के अनुसार) द्वारा विश्लेषण:** जब हम समाजशास्त्रीय कल्पना (Sociological Imagination) का प्रयोग करते हैं, तो यह समस्या केवल एक व्यक्ति की निजी समस्या न रहकर एक जनहित का मुद्दा (Public Issue) बन जाती है:
1. **नौकरी के बाजार की स्थिति:** देश की अर्थव्यवस्था में तकनीकी बदलाव, स्वचालन (Automation) और मंदी के कारण नए रोजगार के अवसरों का सृजन धीमी गति से हो रहा है।
 2. **शिक्षा प्रणाली और बाजार की माँग:** वर्तमान शैक्षणिक पाठ्यक्रम और उद्योग की बदलती जरूरतों के बीच असंतुलन है।
 3. **निष्कर्ष:** समाजशास्त्र हमें यह देखने में मदद करता है कि मेरे मित्र के भाई की बेरोजगारी केवल उनकी व्यक्तिगत कमी नहीं है, बल्कि यह वर्तमान आर्थिक नीतियों, बाजार की माँग और संरचनात्मक बेरोजगारी का परिणाम है।

Raiswathi.in

अध्याय 2

समाजशास्त्र में प्रयुक्त शब्द, अवधारणाएँ और उनका उपयोग

- सामान्य ज्ञान के विपरीत, समाजशास्त्र, अन्य विज्ञानों की तरह, अवधारणाओं, सिद्धांतों और डेटा संग्रह विधियों का अपना एक समूह रखता है।
- समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान होने के नाते, यह आवश्यक है कि उसके द्वारा अध्ययन की जा रही सामाजिक वास्तविकताओं और प्रक्रियाओं के कुछ सर्वमान्य अर्थ हों।
- समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ सामाजिक वास्तविकताओं को परिभाषित करने और समझने में सहायक होती हैं। समाजशास्त्रीय शब्दों पर चर्चा करना इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है ताकि उनके अर्थ को सामान्य उपयोग से अलग किया जा सके, जिसके विभिन्न अर्थ और भावार्थ हो सकते हैं।
- समाजशास्त्र में प्रयुक्त कुछ मूलभूत अवधारणाएँ इस प्रकार हैं:

सामाजिक समूह:

सामाजिक समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो निरंतर एक-दूसरे से बातचीत करते हैं और एक दिए गए समाज के भीतर समान रुचियों और वफादारी की भावना को साझा करते हैं। इसमें निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:

- इसके सदस्यों के बीच निरंतर अंतःक्रिया।
- इसके सदस्यों के बीच अपनेपन की एक साझा भावना।
- साझा की गई रुचियां।
- सामान्य मानदंडों और मूल्यों की स्वीकृति।
- समूह की सदस्यता औपचारिक या अनौपचारिक हो सकती है।

सामाजिक समूह और अन्य प्रकार के सामूहिक समूहों (अर्ध-समूहों) के बीच अंतर: मानव सभाओं और सामूहिक समूहों के सभी रूप सामाजिक समूह नहीं कहलाते। सामाजिक समूह, समुच्चय और सामाजिक श्रेणी जैसी संबंधित अवधारणाओं से भिन्न है। समुच्चय ऐसे लोगों का समूह होता है जो अस्थायी रूप से एक ही भौतिक स्थान साझा करते हैं, लेकिन स्वयं को एक साथ जुड़ा हुआ नहीं मानते और उनके बीच कोई स्थायी या निरंतर अंतःक्रिया नहीं होती।

उदाहरण के लिए: भीड़, या यातायात जाम में फंसे यात्रियों की संख्या।

सामाजिक श्रेणी: यह समान विशेषताओं के आधार पर लोगों के सांख्यिकीय समूहीकरण या वर्गीकरण को संदर्भित करती है। उदाहरण के लिए, सभी पुरुषों का एक ही व्यवसाय होना, या सभी लड़कियों की ऊंचाई 5 फीट या उससे अधिक होना।

सामाजिक समूह के विपरीत, सामाजिक श्रेणी में आने वाले लोग आपस में बातचीत नहीं करते हैं। वास्तव में, वे एक-

दूसरे के अस्तित्व से भी अनभिज्ञ हो सकते हैं।
समूह और सामाजिक श्रेणी दोनों ही अर्ध-समूह हैं जो समय के साथ सामाजिक समूह का रूप ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी इलाके के सभी घरेलू कामगार समय के साथ एक संघ बना सकते हैं और संगठित होकर एक सामाजिक समूह के रूप में एक साझा पहचान विकसित कर सकते हैं।

सामाजिक समूहों के प्रकार:

विभिन्न समाजशास्त्रियों ने सामाजिक समूहों को अलग-अलग प्रकार से वर्गीकृत किया है। अपने वर्गीकरण में वे विभिन्न मापदंडों को ध्यान में रखते हैं।
प्राथमिक समूह और द्वितीयक समूह का वर्गीकरण आकार/संबंधों के प्रकार के आधार पर किया जाता है।

यह कूली द्वारा सदस्यों के बीच साझा किए जाने वाले संबंधों के आकार और प्रकार के आधार पर दिया गया सबसे प्रसिद्ध वर्गीकरण है।

प्राथमिक समूह	द्वितीयक समूह
(i) प्राथमिक समूह लोगों का छोटा समूह होता है।	(i) द्वितीयक समूह आकार में अपेक्षाकृत बड़ा है।
(ii) यह घनिष्ठ, आमने-सामने और भावनात्मक संबंधों से चिह्नित है।	(ii) यह औपचारिक और अवैयक्तिक संबंधों से चिह्नित है।
(iii) उदाहरण के लिए, परिवार और सहकर्मी समूह	(iii) उदाहरण के लिए, क्लब, निवासी कल्याण संघ

प्राथमिक समूह "प्राथमिक" इसलिए कहलाते हैं क्योंकि वे हमारे जीवन में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं और हमारे जीवन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। अक्सर प्राथमिक समूह द्वितीयक समूहों के दायरे में ही बनते हैं। उदाहरण के लिए, कार्यालय में दोस्तों का समूह।

समूह और बाह्य समूह का वर्गीकरण आकार के आधार पर नहीं, बल्कि अपनेपन/लगाव की भावना के आधार पर किया जाता है। समूह और बाह्य समूह का वर्गीकरण आकार से संबंधित नहीं है।

समूह में	बाहरी समूह
(i) वह समूह जिससे कोई व्यक्ति स्वयं को पहचानता है, जिससे उसे जुड़ाव का एहसास होता है।	(i) एक ऐसा समूह जिससे किसी व्यक्ति को जुड़ाव/पहचान की भावना नहीं होती।
(ii) यह एक "हम-समूह" है।	(ii) यह एक "वे समूह" है।
(iii) समूह के सदस्यों में लगाव की भावना होती है।	(iii) बाहरी समूह के सदस्यों के प्रति उदासीनता का भाव होता है और कभी-कभी तो शत्रुता का भाव भी हो सकता है।

संदर्भ समूह: यह वह समूह है जिससे हम संबंधित नहीं हैं, लेकिन हम उनके जैसा बनना चाहते हैं और इसलिए हम उनकी जीवनशैली का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, कई भारतीय युवाओं के लिए, अमेरिकी या बॉलीवुड सितारे एक संदर्भ समूह हैं।

सहकर्मी समूह: एक प्रकार का प्राथमिक समूह जिसमें समान आयु वर्ग के या समान पेशे से जुड़े व्यक्ति शामिल होते हैं। सहकर्मी समूह किसी व्यक्ति के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डालते हैं।

सामाजिक स्थिति और भूमिका:

सामाजिक स्थिति से तात्पर्य किसी समूह या समाज में व्यक्ति की स्थिति से है। प्रत्येक सामाजिक स्थिति से संबंधित कुछ निश्चित अधिकार और कर्तव्य होते हैं। उदाहरण के लिए, डॉक्टर, माता, शिक्षक आदि।

सामाजिक स्थिति: समाज में प्रत्येक व्यक्ति की एक सामाजिक स्थिति होती है। समाज में किसी व्यक्ति द्वारा धारण की गई सभी स्थितियों के समूह को सामाजिक स्थिति समूह कहा जाता है। उदाहरण के लिए, निमिषा की सामाजिक स्थिति समूह में बेटी, सहेली, छात्रा, बहन, क्लब सदस्य आदि शामिल हैं।

प्रतिष्ठा: सामाजिक स्थिति से एक निश्चित प्रतिष्ठा या सामाजिक मूल्य जुड़ा होता है। प्रतिष्ठा व्यक्ति से नहीं बल्कि स्थिति (सामाजिक पद) से जुड़ी होती है। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर की प्रतिष्ठा एक दुकानदार से अधिक हो सकती है, भले ही डॉक्टर की कमाई दुकानदार से कम हो।

सामाजिक स्थिति दो प्रकार की होती है: प्रदत्त स्थिति और अर्जित स्थिति

प्राप्त स्थिति	श्रेय स्थिति
(i) यह किसी व्यक्ति द्वारा योग्यता और प्रयास के बल पर प्राप्त किया जाता है।	(i) यह हमें जन्म, जैविक विरासत, माता-पिता की स्थिति आदि के आधार पर आवंटित किया जाता है।
(ii) यह व्यक्ति की पसंद पर आधारित है	(ii) कोई व्यक्ति इस स्थिति का चुनाव नहीं करता है।
(iii) इससे योग्यता, आय आदि में परिवर्तन हो सकता है।	(iii) स्थिति बदलना कठिन है
(v) यह आधुनिक समाजों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। । उदाहरण के लिए, कक्षा।	(iv) यह पारंपरिक समाजों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, जाति।

भूमिका:

पद और भूमिका आपस में जुड़े हुए हैं क्योंकि भूमिका पद का व्यवहारिक पहलू है। यह पद से जुड़ा अपेक्षित व्यवहार है। उदाहरण के लिए, एक छात्र के पद से कुछ निश्चित अपेक्षित व्यवहार जुड़े होते हैं। हालांकि, पद धारण करते समय भूमिका निभाई जाती है।

समाजीकरण:

भूमिका संघर्ष: प्रत्येक व्यक्ति समाज में अनेक भूमिकाएँ निभाता है। भूमिका संघर्ष तब होता है जब एक भूमिका का निर्वाह दूसरी भूमिका के निर्वाह से टकराता है। उदाहरण के लिए, आधुनिक कामकाजी महिला अक्सर पाती है कि एक पेशेवर के रूप में उसकी भूमिका एक माँ और पत्नी के रूप में उसकी भूमिका से टकराती है।

भूमिका संबंधी रूढ़िवादिता:

इसका तात्पर्य कुछ निश्चित भूमिकाओं को सुदृढ़ करना है। उदाहरण के लिए, पति के लिए कमाने वाले की भूमिका और पत्नी के लिए गृहिणी की भूमिका को अक्सर विज्ञापनों और फिल्मों में रूढ़िबद्ध रूप से दर्शाया जाता है। सामाजिक भूमिकाएँ और सामाजिक स्थिति निश्चित नहीं होतीं। लोग समाज द्वारा उन्हें सौंपी गई भूमिका और स्थिति (यहाँ तक कि जन्मजात स्थिति) को बदलने के प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, दलित जाति के आधार पर उन्हें सौंपी गई निम्न स्थिति का विरोध करते रहे हैं।

सामाजिक स्तरीकरण:

गिडेंस के अनुसार, सामाजिक स्तरीकरण से तात्पर्य समाज के सदस्यों को विभिन्न सामाजिक श्रेणियों या स्तरों में विभाजित करने से है, जिन्हें उनकी सापेक्ष शक्ति, प्रतिष्ठा और धन के आधार पर एक पदानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

ट्यूमिन के अनुसार, "सामाजिक स्तरीकरण से तात्पर्य समाज को सामाजिक श्रेणियों के स्तरों के पदानुक्रम में व्यवस्थित करने से है, जिनमें संपत्ति, शक्ति और सम्मान की असमान मात्रा होती है।" सामाजिक स्तरीकरण कोई व्यक्तिगत तथ्य नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक तथ्य है। यह बड़ी संख्या में व्यक्तियों को पदानुक्रमित रूप से संगठित स्तरों में वर्गीकृत करने को संदर्भित करता है। इसका व्यक्तिगत योग्यता/क्षमताओं से कम और सामाजिक रूप से निर्मित असमानताओं से अधिक संबंध है।

स्तरीकरण की प्रमुख प्रणालियों में शामिल हैं:

- जाति
- कक्षा
- लिंग
- गुलामी
- जागीर

किसी भी व्यक्ति को प्राप्त होने वाले विशेषाधिकार या सामाजिक पुरस्कार उसकी जाति, वर्ग, लिंग और समाज में उसकी स्थिति पर निर्भर करते हैं।

सामाजिक स्तरीकरण और प्राकृतिक भिन्नताएँ:

स्तरीकरण प्रणालियों का आधार सामाजिक होता है, न कि जैविक। ये सामाजिक रूप से निर्मित असमानताएँ हैं। सामाजिक असमानता तब उत्पन्न होती है जब जैविक भिन्नताओं को सांस्कृतिक रूप से निर्धारित किया जाता है और पूर्वाग्रहों के अधीन किया जाता है।

उदाहरण के लिए, नस्लभेद और लिंग आधारित असमानताओं का जैविक भिन्नताओं से कोई खास संबंध नहीं है। अश्वेत लोग उच्च पदों के लिए "स्वाभाविक रूप से अयोग्य" नहीं हैं, न ही महिलाएं बौद्धिक क्षमताओं में "स्वाभाविक रूप से हीन" हैं।

एक और उदाहरण वृद्धावस्था का है। विभिन्न समाजों में वृद्धावस्था का मूल्यांकन अलग-अलग तरीके से किया जाता है। पारंपरिक समाजों में वृद्धावस्था को शक्ति और प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता है, लेकिन आधुनिक समाजों में वृद्धावस्था को उतना सम्मान नहीं दिया जाता।

सामाजिक गतिशीलता:

इससे तात्पर्य विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के बीच व्यक्तियों और समूहों के आवागमन से है। स्तरीकरण की खुली और बंद प्रणालियाँ:

स्तरीकरण की खुली प्रणाली	स्तरीकरण की बंद प्रणाली
1. सामाजिक गतिशीलता आसान है।	1. सामाजिक गतिशीलता सीमित है, या बिल्कुल भी नहीं है।
2. समाज में व्यक्ति की स्थिति उसकी अर्जित स्थिति पर निर्भर करती है।	2. व्यक्ति का पद उसके प्रदत्त दर्जे पर आधारित होता है।
3. यह आधुनिक समाजों में प्रमुख है।	3. यह पारंपरिक समाजों में प्रमुख है।
4. उदाहरण – कक्षा	4. उदाहरण – जाति, गुलामी

स्तरीकरण की एक प्रणाली के रूप में वर्ग:

- वर्ग से तात्पर्य समान आर्थिक संसाधनों, अर्थात् धन, आय या संपत्ति के बंटवारे पर आधारित समूह से है।
- एक ही कक्षा के सदस्य निम्नलिखित बातें साझा करते हैं:
 - समान आर्थिक हितों वाले लोग संगठन बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, औद्योगिक समाज में कारखाने के श्रमिकों द्वारा ट्रेड यूनियन बनाई जाती हैं।
 - उनकी जीवनशैली काफी हद तक समान है।
- उनके जीवन के अवसर भी लगभग समान होंगे क्योंकि स्वास्थ्य, शिक्षा आदि तक उनकी पहुंच लगभग एक जैसी है।

कक्षा की विशेषताएं:

- जाति व्यवस्था के विपरीत, वर्ग को कोई धार्मिक या कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है।
- यह स्तरीकरण की एक खुली प्रणाली है। सामाजिक गतिशीलता अपेक्षाकृत आसान है।
- किसी वर्ग की सदस्यता मुख्यतः प्राप्त दर्जे पर आधारित होती है।

स्तरीकरण की एक प्रणाली के रूप में जाति:

- जाति से तात्पर्य सामाजिक मान-सम्मान/प्रतिष्ठा के संदर्भ में मौजूद असमानताओं से है।
- जातियां जन्मजात समूह हैं, जिनकी सदस्यता जन्म से निर्धारित होती है।
- सामाजिक पदानुक्रम में प्रत्येक जाति को अन्य जातियों की तुलना में उच्च या निम्न स्थान दिया जाता है।

यह हिंदू समाज की एक संस्थागत विशेषता है, लेकिन यह मुसलमानों, ईसाइयों और सिखों जैसे अन्य गैर-हिंदू समुदायों में भी फैल चुकी है। यद्यपि यह पारंपरिक भारत में बहुत महत्वपूर्ण थी, फिर भी आधुनिक भारत में भी राजनीतिक और सामाजिक जीवन में इसका महत्व बरकरार है।

जाति एवं वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति:

जाति व्यवस्था की सटीक आयु दर्शाने वाले कोई प्रामाणिक ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। जाति व्यवस्था का अर्थ समय-समय पर बदलता रहा।

वास्तव में, ऐसा माना जाता है कि जाति व्यवस्था की उत्पत्ति ऋग्वैदिक समाज की वर्ण व्यवस्था से हुई थी। अपने प्रारंभिक चरण में (900-500 ईसा पूर्व के उत्तर वैदिक काल में), जाति व्यवस्था वास्तव में वर्ण व्यवस्था ही थी।

वर्ण व्यवस्था:

वर्ण का शाब्दिक अर्थ है "रंग"। वर्ण व्यवस्था ने हिंदू समाज को व्यवसाय और रंग के आधार पर चार श्रेणियों में विभाजित किया।

- ब्राह्मण-पुजारी
- क्षत्रिय- योद्धा और राजा
- वैश्य-व्यापारी
- शूद्र - कारीगरों, किसानों आदि जैसी सेवा करने वाली जातियाँ।

(तथाकथित "अछूत" या पंचम – पाँचवीं श्रेणी – वर्ण व्यवस्था से बाहर थे)। प्रारंभ में ये विभाजन बहुत कठोर नहीं थे, ये मात्र व्यवसायिक विभाजन थे। इसलिए, श्रेणियों के बीच गतिशीलता संभव थी। उदाहरण के लिए, विश्वामित्र, जो एक क्षत्रिय थे, उपलब्धियों के माध्यम से ब्राह्मण बन गए।

इतिहासकारों का यह भी मानना है कि वर्ण व्यवस्था प्रारंभ में आर्यों और द्रविड़ लोगों के बीच विभाजन का प्रतिनिधित्व करती थी।

उत्तर वैदिक काल में:

- व्यापार में वृद्धि और श्रम के बढ़ते विशेषज्ञता के कारण प्रत्येक वर्ण के भीतर उप-विभागों की संख्या में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप वर्ण व्यवस्था के भीतर नए उप-समूह उभर आए।
- जाति व्यवस्था कठोर हो गई, अर्थात्, यह जन्म के आधार पर परिभाषित होने लगी।
- प्रत्येक वर्ण (और उसके उप-विभागों) को पदानुक्रम के अनुसार वर्गीकृत किया गया था, और उनके जीवन और विभिन्न जातियों के बीच संबंधों को नियंत्रित करने वाले सख्त नियम थे।
- पहले तीन वर्ण "द्विज" जातियाँ बन गए।
- समाज के कठोर और पदानुक्रमित विभाजन को धर्मशास्त्रों और मनुस्मृतियों जैसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से धार्मिक औचित्य प्राप्त हुआ। इन ग्रंथों में जाति के नियम, चारों वर्णों और उनके उप-विभागों के असमान कर्तव्य निर्धारित किए गए हैं। वास्तव में, कर्म और धर्म की धार्मिक अवधारणाओं ने जाति व्यवस्था को और मजबूत किया।

शुद्धता और अशुद्धता के विचार—पारंपरिक भारत में, जाति व्यवस्था धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त “शुद्धता और अशुद्धता” के विचारों पर आधारित थी। यह माना जाता था कि “सबसे शुद्ध” ब्राह्मण पवित्रता के निकट होते हैं, और इसलिए अन्य सभी से श्रेष्ठ होते हैं। “अछूत” “सबसे अशुद्ध” होते हैं और इसलिए सबसे हीन माने जाते हैं। ब्राह्मण का स्पर्श मात्र भी शुद्ध माना जाता था, जबकि तथाकथित अछूतों के स्पर्श, छाया और व्यवसाय से संबंधित हर चीज “अशुद्ध” मानी जाती थी।

जाति व्यवस्था की विशेषताएं:

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि उपर्युक्त विशेषताएं केवल प्राचीन ग्रंथों में वर्णित नियम हैं। हमारे पास कोई पुख्ता प्रमाण नहीं है जो हमें यह बताए कि ये नियम वास्तव में या अनुभवजन्य रूप से विभिन्न जातियों के जीवन को कैसे निर्धारित करते थे।

- जाति जन्मजात होती है: जाति का निर्धारण जन्म से होता है।
- एक व्यक्ति अपने माता-पिता की जाति में जन्म लेता है। जाति चुनाव का विषय नहीं है। कोई व्यक्ति अपनी जाति को बदल नहीं सकता या छोड़ नहीं सकता।
- जाति व्यवस्था अंतर्विवाही है, अर्थात् विवाह केवल समूह के सदस्यों तक ही सीमित है।
- भोजन और भोजन साझा करने के संबंध में सख्त नियम: जातिगत सदस्यता में भोजन और भोजन साझा करने के संबंध में नियम शामिल होते हैं, किस प्रकार के खाद्य पदार्थ खाए जा सकते हैं और नहीं खाए जा सकते हैं, यह निर्धारित होता है और यह भी निर्धारित होता है कि किसके साथ भोजन साझा किया जा सकता है।
- पद और स्थिति का पदानुक्रम: सभी जातियाँ पद और स्थिति के पदानुक्रम में व्यवस्थित होती हैं, जबकि कई जातियों की पदानुक्रमिक स्थिति क्षेत्र के अनुसार भिन्न हो सकती है।
- खंडीय संगठन: जाति में उप-विभाजन होते हैं, अर्थात् जाति में लगभग हमेशा उप-जातियाँ होती हैं और उप-जातियों में उप-उपजातियाँ हो सकती हैं। 7. पारंपरिक रूप से व्यवसाय से संबद्ध: किसी जाति में जन्मा व्यक्ति केवल उसी जाति से संबंधित व्यवसाय कर सकता था। अतः जाति व्यवस्था के अंतर्गत व्यवसाय वंशानुगत होते थे

वर्ण और जाति:

1950-70 के दशक में गांवों के समाजशास्त्रीय अध्ययनों से पता चला कि स्थानीय स्तर पर जाति व्यवस्था वास्तव में वर्ण व्यवस्था से भिन्न है।

वर्ण-जाति, जो एक व्यापक अखिल भारतीय वर्गीकरण है, वास्तव में वर्गीकरण के स्तर पर मौजूद पदानुक्रमों पर आधारित है और सभी स्तरों पर एक समान है, लेकिन क्षेत्र के अनुसार भिन्न होती है।

भारत में केवल चार वर्ण हैं—प्रत्येक क्षेत्र में एक जटिल विभाजन।

वास्तव में समकालीन भारतीय गांवों में सैकड़ों जातियाँ और उपजातियाँ मौजूद हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि समकालीन भारत में जाति व्यवस्था के दो मुख्य पहलू हैं:

1. अनुष्ठानिक पहलू: यह पवित्रता के विचारों पर आधारित है। यह धार्मिक ग्रंथों से लिया गया है।
2. धर्मनिरपेक्ष पहलू: यह आर्थिक और राजनीतिक दोनों पहलुओं को ध्यान में रखता है। इसलिए, स्थानीय पदानुक्रमों में जाति की स्थिति कई कारकों पर निर्भर करती है।

- किसी जाति के रीति-रिवाज और परंपराएँ
- खान-पान की आदतें (शाकाहारी या मांसाहारी, सूअर का मांस खाने वाले या न खाने वाले)
- पेशा
- भूमि स्वामित्व।
- राजनीतिक शक्ति आदि।

स्थानीय स्तर पर, अक्सर मध्यवर्ती और निम्न स्तर की जातियाँ संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के माध्यम से जाति व्यवस्था में ऊपर उठने का प्रयास करती हैं।

- संस्कृतिकरण की अवधारणा श्री एम.एन. श्रीनिवास द्वारा प्रस्तुत की गई थी।
- इसका तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा एक निम्न हिंदू जाति या जनजाति, उच्च जाति के लोगों के रीति-रिवाजों, परंपराओं और जीवनशैली का अनुकरण करके स्थानीय सामाजिक पदानुक्रम में ऊपर उठने का प्रयास करती है। उदाहरण के लिए, शराब छोड़ना, शाकाहार अपनाना आदि।

प्रमुख जाति:

प्रमुख जाति शब्द एम.एन. श्रीनिवास द्वारा ग्रामीण भारत में परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के लिए प्रस्तुत किया गया था। प्रमुख जातियाँ वे मध्यवर्ती जातियाँ हैं (प्रमुख जातियाँ ब्राह्मण होना आवश्यक नहीं है। पंजाब, उत्तर प्रदेश और हरियाणा के कुछ हिस्सों में गैर-ब्राह्मण जातियाँ भी प्रमुख जातियाँ हैं) जो स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर प्रभुत्व स्थापित करती हैं, और यह प्रभुत्व निम्नलिखित विशेषताओं की उपस्थिति के कारण होता है:

- आर्थिक शक्ति: उनके पास बड़ी मात्रा में कृषि योग्य भूमि है। भूमि सुधारों के बाद उनमें से बड़ी संख्या में लोगों को भूमि अधिकार प्राप्त हुए। इसलिए, वे कृषि अर्थव्यवस्था पर हावी हैं। साथ ही, शहरी आय के स्रोतों, पश्चिमी शिक्षा और सरकारी एवं प्रशासनिक पदों तक उनकी बेहतर पहुंच है।
- राजनीतिक शक्ति: प्रभावशाली जातियाँ संख्यात्मक रूप से अधिक हैं। इसी कारण क्षेत्रीय राजनीति में उनका वर्चस्व है। प्रभावशाली जातियों के उदाहरण हैं: बिहार और उत्तर प्रदेश के यादव, आंध्र प्रदेश के रेड्डी, पंजाब और हरियाणा के जाट।

सामाजिक नियंत्रण:

समाज मनुष्यों का एक सामंजस्यपूर्ण संगठन है। व्यक्तियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी भूमिका निभाएं और तदनुसार कार्य करें। अस्तित्व और प्रगति के लिए समाज को अपने सदस्यों पर एक निश्चित नियंत्रण रखना आवश्यक है। ऐसे नियंत्रणों को सामाजिक नियंत्रण कहा जाता है। एल. बर्नार्ड के अनुसार, "सामाजिक नियंत्रण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह पर प्रभावी ढंग से उद्दीपन किया जाता है, जिससे ऐसी प्रतिक्रियाएं उत्पन्न होती हैं जो समूह के अनुरूप कार्य करती हैं।"

सामाजिक नियंत्रण की विशेषताएं:

सामाजिक नियंत्रण में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:

- यह एक प्रभाव है: यह प्रभाव जनमत, प्रश्न, सामाजिक सुझाव, धर्म, तर्क की अपील और समूह द्वारा उपयुक्त समझे जाने वाले किसी भी अन्य तरीके के माध्यम से अत्यधिक हो सकता है।
- समाज का प्रभाव पड़ता है: इसका अर्थ है कि कोई समूह किसी व्यक्ति पर किसी एक व्यक्ति की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से प्रभाव डाल सकता है। समूह परिवार, चर्च, राज्य, क्लब, स्कूल, ट्रेड यूनियन आदि हो सकता है। हालांकि, प्रभाव की प्रभावशीलता कई कारकों पर निर्भर करती है। कभी-कभी परिवार का प्रभाव इसके विपरीत भी हो सकता है—जैसे कि समूह का प्रभाव चर्च के प्रभाव से अधिक प्रभावी हो सकता है। यह प्रभाव समूह के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए डाला जाता है। कुल मिलाकर, सामाजिक नियंत्रण किसी विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह उद्देश्य हमेशा समूह के अन्य सदस्यों का कल्याण होता है, इस प्रकार पूरे समूह के कल्याण के लिए प्रयास किया जाता है। व्यक्ति को अन्य सदस्यों के अस्तित्व और उनके हितों के प्रति जागरूक किया जाता है। इस प्रकार, सभी के हितों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता:

समाज के अस्तित्व के लिए सामाजिक नियंत्रण आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना अलग व्यक्तित्व होता है।

स्वभाव, विचार, रुचियां, आदतें और दृष्टिकोण किसी भी दो व्यक्तियों से भिन्न होते हैं। लोगों के रहन-सहन में इतना अंतर होता है

कि हर क्षण उनके बीच टकराव की संभावना बनी रहती है। इसलिए, समाज में रहने वाले सभी लोगों के हितों की रक्षा के लिए सामाजिक नियंत्रण आवश्यक है।

सहयोगात्मक दृष्टिकोण विकसित करना:

सामाजिक नियंत्रण की सहायता से व्यक्ति अपने हितों, आदतों,

स्थिति और सामाजिक दर्जे के अनुसार एक-दूसरे के संपर्क में आ पाते हैं। इस प्रकार वे सहयोगात्मक स्वभाव विकसित करते हैं, जो समाज के विकास का मूलभूत तत्व है।

सामाजिक स्वीकृति प्रदान करना:

सामाजिक नियंत्रण सामाजिक स्वीकृति और व्यवहार के सामाजिक तौर-तरीके प्रदान करता है। प्रत्येक समाज में अनेक नियम और रीति-रिवाज होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को इनका पालन करना होता है। यदि कोई व्यक्ति सामाजिक नियमों का उल्लंघन करता है, तो सामाजिक नियंत्रण उसे उनका पालन करने के लिए बाध्य करता है।

उपरोक्त कारणों से सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता स्पष्ट होती है। आधुनिक समाज में इसकी आवश्यकता और भी अधिक है।

सामाजिक नियंत्रण के साधन और माध्यम:

वे साधन अनेक हैं जिनके द्वारा व्यक्तियों को समूह के रीति-रिवाजों और जीवन मूल्यों के अनुरूप चलने के लिए विवश किया जाता है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं रीति-रिवाज, कानून, जनमत, धर्म, नैतिकता, सामाजिक सुझाव और मानदंड।

रीति-रिवाज और कानून:

सामाजिक नियंत्रण स्थापित करने में रीति-रिवाज, कानून और परंपरा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें से रीति-रिवाज सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है और समाज में इसके महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। ये बहुत शक्तिशाली होते हैं और सामाजिक जीवन को नियंत्रित करते हैं। ये समाज के जीवन के लिए आवश्यक हैं और विशेष रूप से निरक्षर लोगों में बहुत प्रभावी होते हैं। ये हमारी संस्कृति को संरक्षित करते हैं और अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं। ये लोगों को एक साथ लाते हैं और उनके बीच सामाजिक संबंध विकसित करते हैं। बोगार्ड्स के अनुसार, "रीति-रिवाज और परंपराएं समूह द्वारा स्वीकृत नियंत्रण की तकनीकें हैं जो अच्छी तरह से स्थापित हो चुकी हैं, जिन्हें स्वाभाविक माना जाता है और जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहती हैं।"

रीति-रिवाज की विशेषताएं

- रीति-रिवाज एक सामाजिक घटना है।
- रीति-रिवाज को सामाजिक मान्यता प्राप्त है।
- प्रथा एक मानक है।
- रीति-रिवाजों का सामाजिक महत्व बहुत अधिक है।
- रीति-रिवाज सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखते हैं।
- परंपरा वंशानुगत होती है।
- कस्टम को बाहरी स्वीकृति प्राप्त है।

कानून:

आदिम समाज में, नियम और रीति-रिवाज व्यक्तिगत व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त थे क्योंकि उनका लगभग निर्विवाद अनुपालन होता था, लेकिन आधुनिक सभ्य समाजों में रीति-रिवाज अपना प्रभाव खोते जा रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप राज्य द्वारा व्यक्ति को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाए जाते हैं। सोमर ने कहा कि कानून वास्तव में संहिताबद्ध रीति-रिवाज और परंपराएं हैं।

परिभाषा:

मैकाइवर और पेज के अनुसार, "कानून नियमों का वह समूह है जिसे राज्य की अदालतों द्वारा मान्यता दी जाती है, उसकी व्याख्या की जाती है और किसी विशेष परिस्थिति में लागू किया जाता है।"

कानून की विशेषताएं

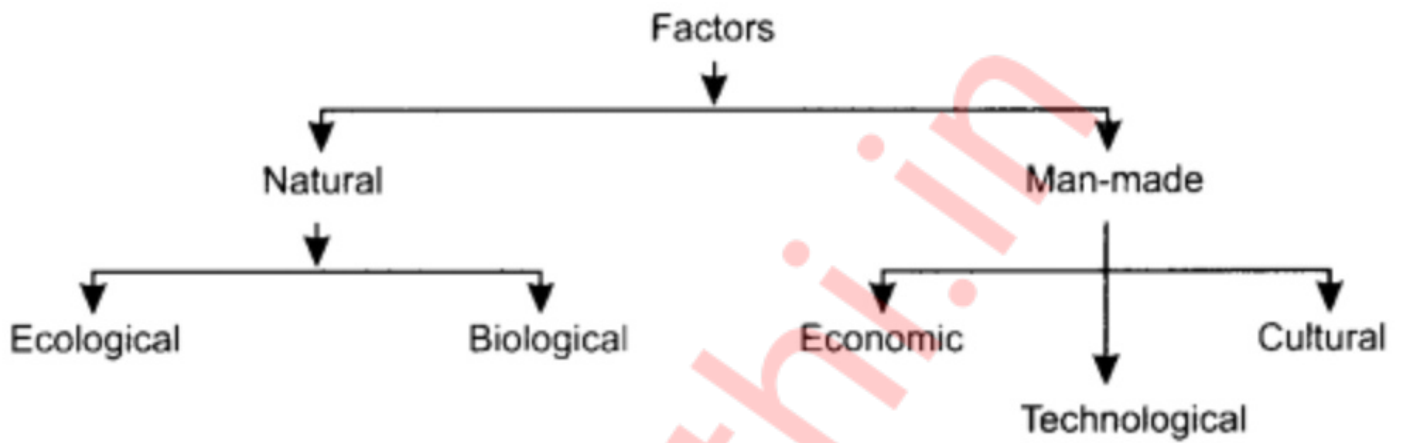
- कानून, राज्य द्वारा अपने सदस्यों के लिए निर्धारित मानवीय गतिविधि की सामान्य शर्तें हैं।
- यह सचेत और गहन योजना तथा सोच-समझकर तैयार किए गए सूत्र का परिणाम है।
- कानून निश्चित, स्पष्ट और सटीक होता है।

- समान परिस्थितियों में वे बिना किसी अपवाद के सभी के लिए समान हैं।
- कानून का उल्लंघन करने पर राज्य के अधिकारियों द्वारा निर्धारित दंड का प्रावधान है।

सामाजिक परिवर्तन के कारक:

सामाजिक परिवर्तन लाने वाले अनेक कारक हैं।

पारिस्थितिक कारक:



मनुष्य ने अंतरिक्ष में कदम रखा है, लेकिन भौगोलिक घटनाओं पर उसका नियंत्रण नगण्य है। प्रकृति ने मानो अपनी शक्ति का प्रमाण देते हुए कई बार अपनी विनाशकारी शक्ति का प्रदर्शन किया है। मानव इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ समृद्ध सभ्यताएँ प्राकृतिक आपदाओं के कारण नष्ट हो गईं, उदाहरण के लिए मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यताएँ भूकंप के परिणामस्वरूप नष्ट हो गईं। भौगोलिक परिस्थितियाँ काफी हद तक लोगों के पहनावे, भोजन, भाषा आदि को प्रभावित करती हैं। हालाँकि, भूकंप, बाढ़, तूफान और अन्य प्राकृतिक घटनाएँ सामाजिक संरचना को अचानक बदल देती हैं।

महत्वपूर्ण शब्द:

- सामाजिक समूह: औपचारिक या अनौपचारिक सदस्यता मानदंडों द्वारा परिभाषित व्यक्तियों का एक समूह, जो एकता की भावना साझा करते हैं या अपेक्षाकृत स्थिर अंतःक्रियात्मक पैटर्न में एक साथ बंधे होते हैं, सामाजिक समूह कहलाते हैं।
- सामाजिक व्यवस्था: किसी भी संख्या में तत्वों के बीच संरचित या व्यवस्थित संबंधों की एक प्रणाली, जहाँ प्रणाली एक संपूर्ण या एकता का निर्माण करती है।
- सामाजिक प्रवृत्ति: किसी सामाजिक सूचक या सूचकांक द्वारा प्रदर्शित परिवर्तन का एक उल्लेखनीय पैटर्न।
- समाज कार्य: यह एक सामान्य शब्द है जिसका प्रयोग पीड़ा की रोकथाम और निवारण के माध्यम से मानव कल्याण को बढ़ावा देने के विभिन्न संगठित तरीकों के लिए किया जाता है।
- समाजीकरण: एक ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा हम समाज के सदस्य बनना सीखते हैं, समाज के मानदंडों और मूल्यों को आत्मसात करते हैं और साथ ही अपनी सामाजिक भूमिकाओं को निभाना सीखते हैं।

- सामाजिक समस्याएं: सामाजिक अव्यवस्था की अभिव्यक्ति मानी जाने वाली और परिवर्तन की आवश्यकता वाली स्थितियों और असामान्य व्यवहारों की श्रेणी पर लागू होने वाला एक सामान्य शब्द, जिसे हम सामाजिक इंजीनियरिंग कहते हैं।
- सामाजिक व्यवस्था: समाजशास्त्र का मुख्य विषय सामाजिक व्यवस्था की व्याख्या करना है, यह बताना है कि समाज कैसे और क्यों अस्तित्व में आए।
- सामाजिक तथ्य: सोचने, महसूस करने और कार्य करने के वे तरीके जिन्हें व्यक्ति बाहरी और बाध्यकारी के रूप में अनुभव करते हैं, और जो एक सामाजिक समूह में सामान्य होते हैं।
- सामाजिक नियंत्रण: इससे तात्पर्य उन सामाजिक प्रक्रियाओं से है जिनके द्वारा व्यक्तियों या समूहों के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है।
- सामाजिक भूमिका: विशिष्ट सामाजिक स्थितियों से जुड़ी सामाजिक अपेक्षाएं और ऐसी अपेक्षाओं की कार्यप्रणाली का विश्लेषण।
- अनुष्ठान: व्यवहार का एक ऐसा स्वरूप जो अक्सर दोहराया जाता है और उचित समय पर किया जाता है।
- सामाजिक स्थिति: यह सामाजिक संरचना में किसी व्यक्ति की स्थिति को संदर्भित करती है। यह जन्मजात या अर्जित हो सकती है।
- पहचान: किसी व्यक्ति या समूह के चरित्र की विशिष्ट विशेषताएं जो इस बात से संबंधित होती हैं कि वे क्यों हैं और उनके लिए क्या मायने रखता है।
- प्रतिबंध: पुरस्कार या दंड का एक ऐसा तरीका जो सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार को सुदृढ़ करता है।
- मानदंड: व्यवहार के लिखित या अलिखित नियम जो सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाते हैं।

अध्याय 3:

सामाजिक संस्थाओं को समझना

(Understanding Social Institutions)

सामाजिक संस्थाएँ - परिचय और मूलभूत अवधारणाएँ

1. सामाजिक संस्था (Social Institution) क्या है?

सामान्य बोलचाल में 'संस्था' शब्द का प्रयोग किसी भवन या संगठन (जैसे स्कूल या अस्पताल) के लिए किया जाता है। परंतु समाजशास्त्र में सामाजिक संस्था का अर्थ स्थापित और स्वीकृत नियमों, कार्यविधियों, प्रथाओं तथा कानूनों के उस समूह से है जो समाज के नियमित और निरंतर संचालन को सुनिश्चित करता है।

- सरल परिभाषा: सामाजिक संस्थाएँ वे अदृश्य नियम और संरचनाएँ हैं जो समाज में लोगों के व्यवहार को दिशा देती हैं, नियंत्रित करती हैं और समाज को सुचारू रूप से चलाती हैं।

उदाहरण: परिवार, विवाह, धर्म, शिक्षा, कानून, राज्य और अर्थव्यवस्था।

2. सामाजिक संस्थाओं की मुख्य विशेषताएँ

क्रम	विशेषता	विवरण एवं अर्थ
1	स्थायित्व एवं निरंतरता	संस्थाएँ व्यक्तियों के आने-जाने या मृत्यु से समाप्त नहीं होतीं; वे पीढ़ियों तक निरंतर बनी रहती हैं।
2	सुस्थापित नियमबद्धता	ये संस्थाएँ लिखित कानूनों, सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं या प्रथाओं द्वारा संचालित होती हैं।
3	दोहरा पहलू (प्रतिबंध व अवसर)	यह व्यक्तियों के अनुचित व्यवहार पर प्रतिबंध लगाती हैं तथा साथ ही उन्हें सुरक्षा, अधिकार व अवसर भी देती हैं।
4	अनिवार्य उपस्थिति	दुनिया के हर छोटे या बड़े समाज में सामाजिक संस्थाएँ किसी न किसी रूप में अवश्य पाई जाती हैं।

3. संस्थाएँ स्वयं में लक्ष्य (Institutions as Goals)

कई बार लोग सामाजिक संस्थाओं (जैसे परिवार, धर्म या राष्ट्र/राज्य) को केवल साधन न मानकर अपने आप में 'लक्ष्य' मान लेते हैं।

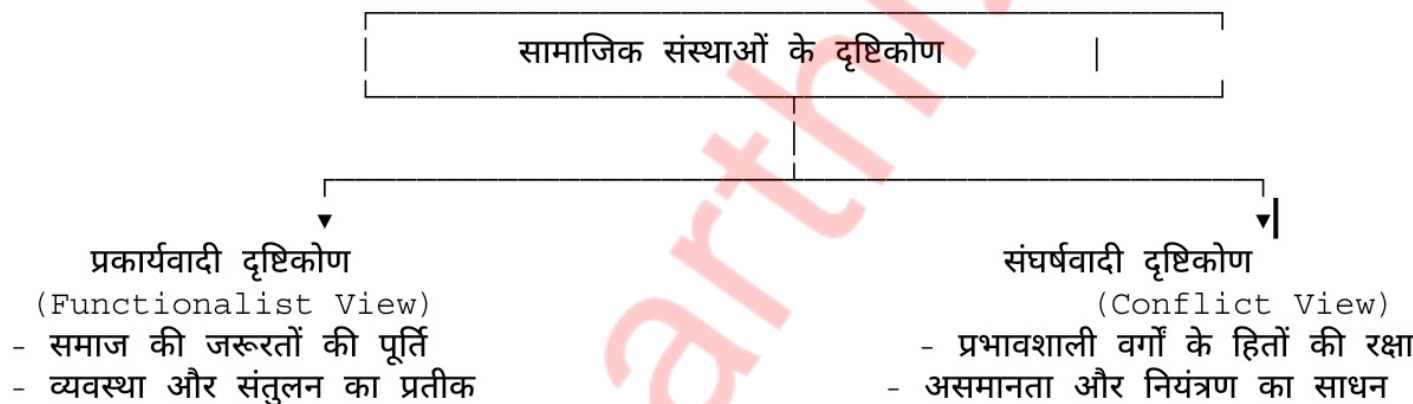
उदाहरण: जब कोई सैनिक देश (राज्य) की रक्षा के लिए अपनी जान दे देता है, या जब माता-पिता अपने परिवार के सम्मान के

4. दैनिक जीवन के उदाहरण (Example for Better Understanding)

संस्था	प्रतिबंध (Constraints / Control)	अवसर (Opportunities / Benefits)
स्कूल (शिक्षा संस्था)	समय पर आना, अनुशासन में रहना, यूनिफॉर्म पहनना और परीक्षा देना।	ज्ञान, कौशल, डिग्री, सामाजिक पहचान और रोजगार प्राप्त करने का अवसर।
परिवार	बड़ों का आदर करना, पारिवारिक मर्यादा में रहना, कर्तव्यों का पालन।	सुरक्षा, भावनात्मक संबल, सामाजीकरण और पालन-पोषण।

सामाजिक संस्थाओं के प्रति प्रमुख समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

समाजशास्त्र में सामाजिक संस्थाओं को समझने के मुख्य रूप से दो अलग-अलग और परस्पर विरोधी दृष्टिकोण हैं:



1. प्रकार्यवादी दृष्टिकोण (Functionalist Perspective)

- मूल विचार: प्रकार्यवादी मानते हैं कि सामाजिक संस्थाएँ समाज की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने और सामाजिक व्यवस्था में संतुलन व निरंतरता बनाए रखने के लिए अस्तित्व में आती हैं।
- दृष्टि: समाज को एक 'मानव शरीर' की तरह देखा जाता है, जहाँ परिवार, धर्म, शिक्षा आदि संस्थाएँ शरीर के अंगों की तरह काम करती हैं।
- संस्थाओं के प्रकार:
- अनौपचारिक संस्थाएँ (Informal Institutions): जैसे परिवार, नातेदारी और धर्म। ये बिना लिखित कानूनों के परंपराओं पर चलती हैं।
- औपचारिक संस्थाएँ (Formal Institutions): जैसे कानून, राज्य और औपचारिक शिक्षा। ये लिखित नियमों और संहिताओं पर आधारित होती हैं।

2. संघर्षवादी दृष्टिकोण (Conflict Perspective)

- मूल विचार: संघर्षवादी (जैसे कार्ल मार्क्सवादी विचारक) मानते हैं कि समाज में सभी व्यक्तियों का स्थान समान नहीं होता। इसलिए, सामाजिक संस्थाएँ संपूर्ण समाज का भला नहीं करतीं, बल्कि प्रभावशाली वर्गों (वर्ग, जाति, लिंग या धर्म के आधार पर शक्तिशाली समूह) के हितों का पोषण करती हैं।

- दृष्टि: संस्थाएँ शक्तिशाली वर्गों के विचारों और नियमों को पूरे समाज पर लादने का काम करती हैं ताकि शासक वर्ग का प्रभुत्व बना रहे।

3. दोनों दृष्टिकोणों की तुलनात्मक सारणी

तुलना का आधार	प्रकार्यवादी दृष्टिकोण (Functionalist View)	संघर्षवादी दृष्टिकोण (Conflict View)
मूल उद्देश्य	समाज की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना।	प्रभावशाली व शक्तिशाली वर्गों के हितों की रक्षा करना।
सामाजिक व्यवस्था	समाज में संतुलन, शांति और सद्भाव बनाए रखना।	समाज में असमानता, शोषण और वर्चस्व को बनाए रखना।
व्यक्ति पर प्रभाव	व्यक्ति को अनुशासित कर समाज का उपयोगी अंग बनाती हैं।	व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित और नियंत्रित करती हैं।
परिवर्तन का विचार	संस्थाएँ धीरे-धीरे व्यवस्था बनाए रखने हेतु अनुकूलित होती हैं।	संस्थाएँ संघर्ष और असमानता को जन्म देती हैं, जिससे क्रांति होती है।
मुख्य फोकस	सामाजिक सहयोग, एकरूपता और निरंतरता।	शक्ति का असमान वितरण, शोषण और सामाजिक संघर्ष।

परिवार संस्था (Family Institution) - स्वरूप और कार्य

1. परिवार: एक 'नैसर्गिक' दिखने वाली सामाजिक संस्था

परिवार हमें सबसे स्वाभाविक या प्राकृतिक (Natural) संस्था लगता है, क्योंकि हम सभी किसी न किसी परिवार में जन्म लेते हैं। परंतु समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान यह दर्शाते हैं कि परिवार कोई अपरिवर्तनीय या एक जैसा ढांचा नहीं है, बल्कि अलग-अलग समाजों में परिवार के स्वरूप भिन्न-भिन्न होते हैं।

2. प्रकार्यवादी दृष्टि से परिवार का कार्य

प्रकार्यवादी विचारकों (जैसे टालकॉट पार्संस) के अनुसार:

परिवार समाज की नई पीढ़ी का पालन-पोषण और सामाजीकरण (Socialization) करता है।

भूमिका का प्रकार	निर्वहनकर्ता	मुख्य कार्य एवं उत्तरदायित्व
सहायक/आजीविकाकर्ता (Breadwinner)	पुरुष (पति)	घर से बाहर जाकर कार्य करना, धन कमाना और आर्थिक सुरक्षा देना।
प्रभावशाली भावनात्मक/संरचनात्मक	महिला (पत्नी)	घर की देखभाल करना, बच्चों का सामाजीकरण और भावनात्मक संबल देना।

आधुनिक औद्योगिक समाज में श्रम का लिंग-आधारित विभाजन सबसे कुशल माना गया:
पुरुष की भूमिका: घर से बाहर काम करके आजीविका चलाना (Breadwinner)।
महिला की भूमिका: घर की देखभाल करना और बच्चों को भावनात्मक संबल देना (Caregiver)।
आलोचना: समाजशास्त्री योगेंद्र सिंह (1993) और एंथनी गिडेंस (2001) के अनुसार, यह लिंगवादी सोच है।
वास्तविकता में कई संस्कृतियों में महिलाएँ आर्थिक रूप से श्रम बल का बड़ा हिस्सा रही हैं।

3. परिवार के प्रमुख प्रकार

परिवार का प्रकार	संरचना एवं विशेषताएँ
मूल परिवार (Nuclear Family)	इसमें केवल पति, पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। यह औद्योगिक समाजों में अधिक पाया जाता है।
संयुक्त/विस्तृत परिवार (Joint Family)	इसमें दो या दो से अधिक पीढ़ियों के सदस्य (माता-पिता, बच्चे, दादा-दादी, चाचा-चाची आदि) एक साथ रहते हैं तथा साझी रसोई का प्रयोग करते हैं।

4. महिला-प्रधान घर (Female-headed Households)

जब परिवार की मुख्य कर्ता-धर्ता और आजीविका चलाने वाली कोई महिला होती है, तो उसे महिला-प्रधान घर कहते हैं।

कारण:

- पुरुषों का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर प्रवास (Migration)।
- पति की मृत्यु (विधवापन)।
- पुरुषों द्वारा दूसरा विवाह कर पहली पत्नी व बच्चों को छोड़ देना।

उदाहरण: दक्षिण-पूर्व महाराष्ट्र और उत्तरी आंध्र प्रदेश की कोलम (Kolam) जनजाति में महिला-प्रधान घर एक सामाजिक रूप से स्वीकृत मानक है।

परिवार में परिवर्तन, लिंगभेद और लिंगानुपात

1. परिवार के स्वरूपों में परिवर्तन और समाजशास्त्रीय अध्ययन

सामान्यतः यह माना जाता है कि औद्योगिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार तेजी से टूट रहे हैं और मूल परिवार बन रहे हैं। परंतु समाजशास्त्री ए.एम. शाह (1998) ने अपने अध्ययनों से इस आम धारणा को चुनौती दी:

- शाह के अनुसार, स्वतंत्रता के बाद भारत में औसत आयु (Life Expectancy) में वृद्धि हुई (1941-50 में पुरुष 32.5 वर्ष से बढ़कर 1981-85 में 55.4 वर्ष हुए)।
- इसके परिणामस्वरूप बुजुर्गों (60 वर्ष से अधिक) की संख्या बढ़ी और वे ज्यादातर अपने बच्चों के साथ संयुक्त घरों में रहने लगे, जिससे संयुक्त परिवारों की संख्या में वृद्धि भी देखी गई।

2. पारिवारिक संरचना के नियम (निवास एवं सत्ता के आधार पर)

आधार	प्रकार	नियम व अर्थ
आवास के नियम (Residence)	पितृस्थानिक (Patrilocal)	विवाह के बाद नव-दंपति पति के माता-पिता के घर रहते हैं।
	मातृस्थानिक (Matrilocal)	विवाह के बाद नव-दंपति पत्नी के माता-पिता के घर रहते हैं।
सत्ता के नियम (Authority)	पितृतंत्र (Patriarchy)	परिवार में अधिकार, निर्णय और सत्ता पुरुषों के पास होती है।
	मातृतंत्र (Matriarchy)	परिवार में निर्णय लेने और संचालन की प्रमुख भूमिका महिलाओं की होती है।

विशेष बिंदु: दुनिया में मातृवंशीय (Matrilineal) समाज (जहाँ संपत्ति माँ से बेटी को मिलती है, जैसे मेघालय की खासी जनजाति) तो मौजूद हैं, लेकिन पूर्ण मातृतंत्रीय (Matriarchy) समाज के साक्ष्य नहीं मिलते।

3. परिवार में लिंगभेद (Gender Bias) और जनसांख्यिकी

भारतीय परिवार व्यवस्था में लड़कों को वृद्धावस्था का सहारा और लड़कियों को 'पराया धन' माना जाता रहा है। तेलुगु कहावत: "एक लड़की का पालन करना दूसरे के आँगन में पौधे को पानी देने के बराबर है।"

4. भारत में लिंगानुपात के आँकड़े (1901-2011)

वर्ष	कुल लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाएँ)	विशेष सामाजिक टिप्पणी
1901	972	20वीं सदी की शुरुआत का आंकड़ा
1911	964	निरंतर गिरावट की शुरुआत
1921	955	-
1931	950	-
1941	945	-
1951	946	स्वतंत्रता के समय का स्तर
1961	941	-
1971	930	-
1981	934	-
1991	926	ऐतिहासिक रूप से निचला स्तर
2001	933	बाल लिंगानुपात: 927
2011	940	बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष) में भारी गिरावट होकर 919 रहा

चिंताजनक पहलू: तकनीक के दुरुपयोग (कन्या भ्रूण हत्या) के कारण 0-6 वर्ष के बाल लिंगानुपात (Child Sex Ratio) में अत्यधिक गिरावट आई। समृद्ध राज्यों में स्थिति अधिक खराब रही—जैसे पंजाब (846) और हरियाणा के कुछ जिलों में 800 से भी कम।

विवाह संस्था (Marriage Institution) - रूप और नियम

1. विवाह क्या है?

विवाह दो वयस्क व्यक्तियों (पुरुष एवं स्त्री) के बीच लैंगिक संबंधों और साझी गृहस्थी की एक सामाजिक रूप से स्वीकृत और वैध व्यवस्था है।

2. विवाह के मुख्य रूप (Forms of Marriage)

विवाह का प्रकार	उप-प्रकार	अर्थ एवं विशेषताएँ
एकविवाह (Monogamy)	साधारण एकविवाह	एक समय में केवल एक ही जीवनसाथी रखना।
	क्रमिक एकविवाह (Serial Monogamy)	तलाक या जीवनसाथी की मृत्यु के बाद पुनः एक ही साथी से विवाह करना।
बहुविवाह (Polygamy)	बहुपत्नी-प्रथा (Polygyny)	एक पुरुष की एक से अधिक पत्नियाँ होना।
	बहुपति-प्रथा (Polyandry)	एक महिला के एक से अधिक पति होना। (कठोर भौगोलिक व सीमित आर्थिक संसाधनों वाले समाजों में आबादी नियंत्रित रखने हेतु)।

3. विवाह-साथी चयन के नियम

नियम का नाम	अर्थ एवं परिभाषा	व्यावहारिक उदाहरण
अंतर्विवाह (Endogamy)	अपने ही सामाजिक, जातीय, धार्मिक या सांस्कृतिक समूह के भीतर विवाह करना।	भारत में अपनी ही जाति (Caste) के भीतर विवाह करना।
बहिर्विवाह (Exogamy)	अपने विशिष्ट समूह, गोत्र या क्षेत्र से बाहर विवाह करना।	अपने गोत्र (Gotra) से बाहर विवाह करना।
गाँव बहिर्विवाह (Village Exogamy)	लड़की का विवाह अपने जन्म के गाँव से बाहर दूर किसी अन्य गाँव में करना।	उत्तर भारत के गाँवों में प्रचलित प्रथा (ताकि मायके का हस्तक्षेप ससुराल में न हो)।

4. विदाई के लोकगीत और सामाजिक यथार्थ

उत्तर भारतीय लोकगीत विदाई के दुख, कन्या के जन्म स्थान से विछोह और पितृवंशीय असमानता को दर्शाते हैं:

पिताजी हम चिड़ियों के झुंड की तरह हैं, हम दूर उड़ जाएँगी... पिताजी मेरी पालकी आपके घर से नहीं जा सकती (क्योंकि द्वार छोटा है)... बेटी तुम्हें अपने घर (ससुराल) अवश्य जाना होगा।"

नातेदारी (Kinship) की संकल्पना और प्रकार

1. नातेदारी (Kinship) क्या है?

नातेदारी व्यक्तियों के बीच वे सामाजिक और जैविक संबंध हैं जो या तो रक्त (वंश/जन्म) के माध्यम से या विवाह के माध्यम से जुड़ते हैं।

2. नातेदारी के मुख्य प्रकार

नातेदारी का प्रकार	आधार	संबंधियों के उदाहरण
समरक्त नातेदार (Consanguineal Kin)	जैविक संबंध / रक्त संबंध	माता-पिता, भाई-बहन, बेटा-बेटी, दादा-दादी।
वैवाहिक नातेदार (Affinal Kin)	विवाह के माध्यम से बने संबंध	पति-पत्नी, सास-ससुर, साला-साली, ननद, दामाद।

3. परिवार के दो समाजशास्त्रीय रूप (Orientation vs. Procreation)

रूप	समाजशास्त्रीय नाम	विवरण
1	जन्म का परिवार (Family of Orientation)	वह परिवार जिसमें व्यक्ति का जन्म होता है और वह बड़ा होता है (जैसे: माता-पिता, भाई-बहन)।
2	प्रजनन का परिवार (Family of Procreation)	वह परिवार जिसका निर्माण व्यक्ति विवाह के पश्चात् स्वयं करता है (जैसे: पति/पत्नी, बच्चे)।

4. नातेदारी के सामाजिक कार्य

क्रम	नातेदारी का प्रमुख कार्य
1	संपत्ति और पद का उत्तराधिकार: वंश परंपरा के आधार पर संपत्ति का हस्तांतरण तय करना।
2	सामाजिक सुरक्षा: संकट, बीमारी या वृद्धावस्था के समय सहायता और संबल प्रदान करना।
3	विवाह सीमाओं का निर्धारण: अंतर्विवाह और बहिर्विवाह के नियमों को तय करना।

कार्य और आर्थिक जीवन (Work and Economic Life)

1. 'कार्य' (Work) क्या है?

समाजशास्त्र में कार्य को केवल सवैतनिक नौकरी तक सीमित नहीं माना जाता।

सरल परिभाषा: कार्य का अर्थ शारीरिक या मानसिक परिश्रम द्वारा किए जाने वाले उन सभी सवैतनिक (Paid) या अवैतनिक (Unpaid) कार्यों से है जिनका उद्देश्य मानव आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है।

2. अनौपचारिक अर्थव्यवस्था (Informal Economy)

क्षेत्र	विशेषताएँ	उदाहरण
औपचारिक अर्थव्यवस्था	नियमित रोजगार, तय वेतन, कानून का पालन, सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज।	बैंक कर्मचारी, सरकारी शिक्षक, आईटी पेशेवर।
अनौपचारिक अर्थव्यवस्था	नियमित रोजगार से परे, अनियोजित, नकद/वस्तु विनिमय, गैर-रिकॉर्डेड।	दिहाड़ी मजदूर, घरेलू नौकर, फेरीवाले, बेमेल कार्य।

3. पूर्व-आधुनिक बनाम आधुनिक औद्योगिक समाजों में कार

तुलना का आधार	पूर्व-आधुनिक समाज (Pre-modern Society)	आधुनिक औद्योगिक समाज (Modern Industrial Society)
मुख्य व्यवसाय	कृषि, पशुपालन, हस्तकौशल व कुटीर उद्योग।	उद्योग, निर्माण, तकनीक और सेवा क्षेत्र (Service Sector)।
कार्यस्थल	कार्य और घर एक ही स्थान पर होते थे।	कार्यस्थल (कारखाना/ऑफिस) और घर अलग-अलग हो गए।
उत्पादन की इकाई	परिवार सामूहिक रूप से उत्पादन की इकाई था।	व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से मजदूरी/वेतन पर कार्य करता है।
कौशल	एक कारीगर शुरू से अंत तक पूरी वस्तु बनाता था।	अत्यधिक जटिल श्रम विभाजन; कार्य छोटे भागों में बंटा है।

आधुनिक श्रम विभाजन और कार्य का रूपांतरण

1. अत्यधिक जटिल श्रम विभाजन (Complex Division of Labor)

आधुनिक औद्योगिक समाजों की सबसे बड़ी विशेषता है—श्रम का जटिल विभाजन। कार्य हजारों अलग-अलग छोटे-छोटे व्यवसायों और संक्रियाओं (Operations) में बंट गया है।

- पारंपरिक कारीगर: एक बुनकर या कुम्हार कच्चे माल से लेकर अंतिम उत्पाद बनाने तक पूरी प्रक्रिया खुद करता था।
- आधुनिक श्रमिक: कारखाने में एक श्रमिक पूरी वस्तु नहीं बनाता, बल्कि केवल एक ही छोटा सा काम (जैसे केवल बटन लगाना या एक नट कसना) बार-बार दोहराता है।

2. असीमित आर्थिक निर्भरता (Economic Interdependence)

आधुनिक समाज में कोई भी व्यक्ति अपनी जरूरत की सभी वस्तुएं खुद नहीं बनाता। हम अपनी रोटी, कपड़े, बिजली, फोन आदि के लिए दुनिया भर के लाखों अनजान श्रमिकों पर निर्भर हैं।

3. कार्य का रूपांतरण: असेंबली लाइन और 'उदार उत्पादन'

अवधारणा	कार्यप्रणाली	प्रभाव
मूविंग असेंबली लाइन (Moving Assembly Line)	कन्वेयर बेल्ट पर सामान आगे बढ़ता है; श्रमिक निश्चित समय में उस पर काम करते हैं।	उत्पादन की गति बढ़ी, परंतु श्रमिकों का कार्य पर नियंत्रण समाप्त हो गया।
उदार उत्पादन (Lean Production)	कंपनियाँ बदलती बाजार माँगों के अनुसार उत्पादन को विकेंद्रीकृत करती हैं।	ठेकेदारी (Sub-contracting) और अस्थायी नौकरियों में वृद्धि हुई।

4. केस स्टडी: बंगलौर का वस्त्र (गारमेंट) उद्योग (सुप्रिया रॉय चौधरी, 2005)

पहलू	वास्तविक यथार्थ
उत्पादन श्रृंखला	बंगलौर के कपड़ा निर्यातक वैश्विक ब्रांडों के लिए कपड़े बनाते हैं। पूरी श्रृंखला में 100+ संक्रियाएं होती हैं, जिनमें से केवल 15 स्थानीय निर्माता के हाथ में होती हैं।
श्रमिकों की स्थिति	महिला श्रमिक बहुसंख्या में हैं। यदि वे न्यूनतम मजदूरी या वेतन वृद्धि की मांग करती हैं, तो मालिक कारखाने को किसी दूसरे शहर/देश में स्थानांतरित कर देते हैं।

राजनीतिक संस्थाएँ - शक्ति (Power) और सत्ता (Authority)

1. राजनीति का सरोकार

राजनीतिक संस्थाओं का मुख्य सरोकार समाज में शक्ति (Power) के वितरण, प्रबंधन और संगठन से होता है।

2. शक्ति (Power) बनाम सत्ता (Authority)

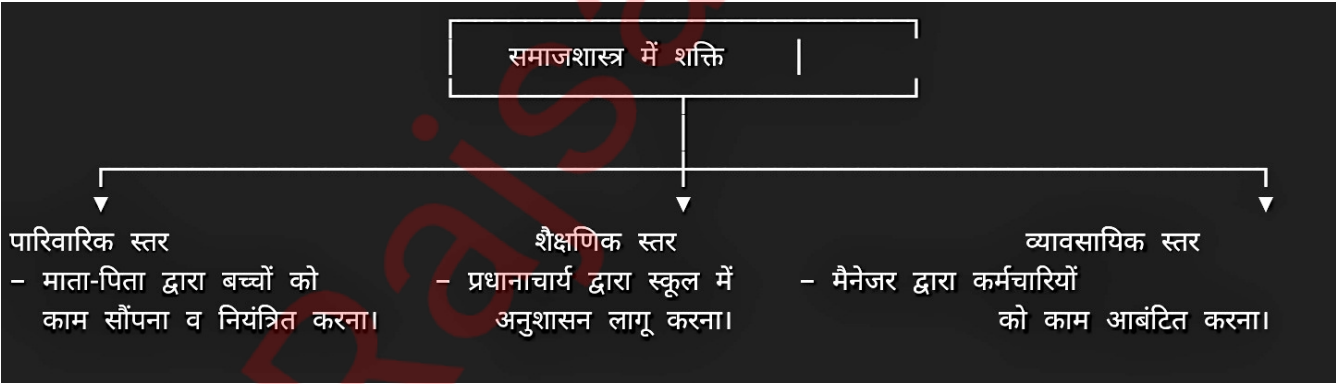
तुलना का आधार	शक्ति (Power)	सत्ता (Authority)
परिभाषा	दूसरों के विरोध करने के बावजूद अपनी इच्छा लागू करने की क्षमता।	शक्ति का वह रूप जिसे समाज द्वारा 'वैध' (Legitimate) स्वीकार किया जाता है।
आधार	बल, दबाव, भय या नियंत्रण पर आधारित हो सकती है।	कानून, संस्थागत नियमों, न्यायप्रियता और सहमति पर आधारित होती है।
स्वीकृति	लोग मजबूरी या डर में आदेश मानते हैं।	लोग स्वेच्छा से इसे सही और उचित मानकर आदेश मानते हैं।
उदाहरण	डाकू द्वारा बंदूक की नोक पर पैसे माँगना।	पुलिस अधिकारी, जज या शिक्षक द्वारा आदेश जारी करना।

3. राज्यविहीन समाज (Stateless Societies)

सामाजिक मानवविज्ञानियों ने ऐसे समाजों का अध्ययन किया जहाँ कोई आधुनिक सरकारी तंत्र (पुलिस, अदालत, संसद) नहीं था, फिर भी समाज में शांति और व्यवस्था बनी रहती थी।

- व्यवस्था का आधार: नातेदारी, विवाह संबंधों, धार्मिक समारोहों और कबीलाई गठबंधनों के माध्यम से विपरीत शक्तियों का संतुलन (Equilibrium) बना रहता था।

4. शक्ति का व्यापक दायरा



समाजशास्त्र केवल नेताओं या संसद तक राजनीति को सीमित नहीं मानता। शक्ति के संबंध हर जगह मौजूद हैं:

- घर में माता-पिता द्वारा बच्चों को काम सौंपना।
 - स्कूल में प्रिंसिपल द्वारा अनुशासन लागू करना।
 - कारखाने में मैनेजर द्वारा मजदूरों को काम बांटना।

राज्य, नागरिकता और राष्ट्रवाद

1. आधुनिक राज्य (Modern State) की अवधारणा

राज्य वह राजनीतिक संगठन है जहाँ एक सरकार (नागरिक सेवा, संसद, पुलिस) एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र पर

शासन करती है और जिसके पास अपनी नीतियों को लागू करने के लिए सैन्य व कानूनी शक्ति होती है।

- प्रकार्यवादी दृष्टि: राज्य समाज के सभी वर्गों के साझे हितों का प्रतिनिधित्व करता है।
- संघर्षवादी दृष्टि: राज्य समाज के केवल प्रभावशाली (धनी/शासक) वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है।

2. नागरिकता के तीन अधिकार (T.H. Marshall के अनुसार)

अधिकार का प्रकार	शामिल अधिकार व सुविधाएँ	ऐतिहासिक प्राप्ति का माध्यम
1. नागरिक अधिकार (Civil Rights)	भाषण की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता, संपत्ति रखने का अधिकार, कानून के सामने समानता।	राजतंत्र के खिलाफ संघर्ष एवं सामाजिक आंदोलन।
2. राजनीतिक अधिकार (Political Rights)	चुनाव में वोट देने (मताधिकार) और सार्वजनिक पद के लिए चुनाव में खड़े होने का अधिकार।	मताधिकार आंदोलन (महिलाओं व गरीबों का संघर्ष)।
3. सामाजिक अधिकार (Social Rights)	न्यूनतम मजदूरी, स्वास्थ्य सेवाएं, बेरोजगारी भत्ता, सामाजिक सुरक्षा का अधिकार।	कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की स्थापना।

इतिहास: ये अधिकार आसानी से नहीं मिले; इन्हें क्रांतियों (जैसे फ्रांस की क्रांति, भारत का स्वतंत्रता संग्राम) और मताधिकार आंदोलनों के माध्यम से हासिल किया गया।

3. राष्ट्रवाद (Nationalism)

राष्ट्रवाद प्रतीकों और विश्वासों का वह समूह है जो लोगों के भीतर एक साझे राजनीतिक समुदाय (जैसे 'भारतीय' या 'फ्रांसीसी') का हिस्सा होने का बोध और गर्व की भावना पैदा करता है। यह आधुनिक राज्य के साथ विकसित हुआ है।

धर्म का समाजशास्त्र (Sociology of Religion)

1. धर्म का समाजशास्त्रीय अध्ययन कैसे अलग है?

दृष्टिकोण	मुख्य बिंदु
1. आनुभविक (Empirical)	समाजशास्त्री यह जाँच नहीं करते कि कौन सा धर्म सही या गलत है, बल्कि यह देखते हैं कि धर्म समाज में वास्तव में कैसे कार्य करता है।
2. तुलनात्मक (Comparative)	यह दुनिया के सभी धर्मों को एक समान धरातल पर रखकर बिना पूर्वाग्रह के अध्ययन करता है।
3. अंतःसंबंधी (Relational)	यह धर्म का संबंध अर्थशास्त्र, राजनीति, लिंग और पारिवारिक जीवन से जोड़कर अध्ययन करता है।

2. धर्म की सार्वभौमिक विशेषताएँ

- प्रतीकों का समुच्चय (Symbols): श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक (जैसे क्रॉस, ॐ, चांद-तारा)।
- अनुष्ठान एवं समारोह (Rituals): प्रार्थना, उपवास, विशेष भोजन या गायन।
- विश्वासकर्ताओं का समुदाय (Community): एक समान आस्था रखने वाले लोगों का समूह।

3. प्रमुख समाजशास्त्रीय सिद्धांत

समाजशास्त्री	सिद्धांत / योगदान	मुख्य विचार
एमिल दुर्खाइम	पवित्र (Sacred) व सांसारिक (Profane)	धर्म दुनिया को दो भागों में बांटता है: पवित्र (श्रद्धा एवं अलौकिक शक्ति से जुड़ी वस्तुएँ) और सांसारिक (दैनिक जीवन की साधारण वस्तुएँ)।
मैक्स वेबर	कैल्विनवाद और पूँजीवाद (Protestant Ethic)	कैल्विनवादी (प्रोटेस्टेंट) धर्म के 'कठोर परिश्रम', 'पूर्वनिर्धारण का सिद्धांत' और 'बचत/पुनः निवेश' के विचारों ने आधुनिक पूँजीवाद (Capitalism) के विकास में मदद की।

4. केस स्टडी: नासिक का धार्मिक तीर्थ क्षेत्र (हेमलता आचार्य, 1974)

आधुनिकता ने धार्मिक पेशेवरों के जीवन को बदल दिया है। नासिक में तीर्थयात्रियों को तांबे के बर्तन बेचने वाले दस्तकारों की माँग अनियमित होने के कारण उनके बच्चों ने पारंपरिक पुरोहिती/दस्तकारी छोड़कर आधुनिक उद्योग, व्यापार और शिक्षा को अपना लिया है।

शिक्षा संस्था

1. शिक्षा संस्था (Education Institution)

समाज का प्रकार	शिक्षा का स्वरूप	सामाजीकरण का तरीका
साधारण समाज (Simple Societies)	अनौपचारिक (Informal)	बच्चे बड़ों के साथ दैनिक कार्यों में भाग लेकर परंपराएं सीख लेते थे।
जटिल समाज (Complex Societies)	औपचारिक (Formal)	श्रम विभाजन बढ़ने से विशिष्ट ज्ञान हेतु स्कूलों, मानकीकृत पाठ्यक्रमों की आवश्यकता पड़ी।

2. शिक्षा पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

- प्रकार्यवादी दृष्टि (एमिल दुर्खाइम): शिक्षा समाज के मुख्य मूल्यों का संप्रेषण करती है, सामाजिक संरचना का नवीनीकरण करती है और बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार भविष्य की भूमिकाओं के लिए चुनती है।
- संघर्षवादी दृष्टि (अविजीत पाठक, प्रतीची रिपोर्ट): शिक्षा स्तरीकरण और असमानता को बढ़ावा देती है। अमीर और संभ्रांत बच्चों के स्कूल उन्हें आत्मविश्वास देते हैं, जबकि गरीब बच्चों के सरकारी/सुविधाहीन स्कूल उन्हें वंचित रखते हैं।
- प्रतीची रिपोर्ट (2002): फसल की कटाई के समय अनुसूचित जाति/जनजाति के बच्चे स्कूल नहीं जा पाते क्योंकि वे बाल मजदूरी या घरेलू काम (जैसे 10 साल की बच्ची का गोबर चुनना) में लगे होते हैं।

3. अध्याय की प्रमुख शब्दावली (Glossary)

शब्द	समाजशास्त्रीय अर्थ एवं परिभाषा
नागरिक (Citizen)	राजनीतिक समुदाय का सदस्य जिसे राज्य द्वारा अधिकार और कर्तव्य प्रदान किए जाते हैं।
प्रभुसत्ता (Sovereignty)	किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र पर राज्य का अविवादित और कानूनी राजनीतिक शासन।
विचारधारा (Ideology)	साझा विचारों का समूह जो शक्तिशाली वर्गों के हितों और असमानता को सही ठहराता है।
वैधता (Legitimacy)	किसी राजनीतिक या सामाजिक व्यवस्था के न्यायपूर्ण और कानूनी होने का विश्वास।
सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility)	व्यक्ति या समूह का एक सामाजिक प्रस्थिति/पेशे से दूसरे में स्थानांतरित होना।

4. अभ्यास प्रश्न और संक्षिप्त उत्तर

प्र. 1. आपके समाज में विवाह के कौन से नियमों का पालन किया जाता है?

उत्तर: भारतीय समाज में सामान्यतः जातिगत अंतर्विवाह (Endogamy) का पालन होता है (अपनी ही जाति में विवाह)। साथ ही गोत्र एवं गाँव बहिर्विवाह (Exogamy) का पालन किया जाता है, जहाँ एक ही गोत्र या एक ही गाँव के भीतर विवाह वर्जित माना जाता है।

प्र. 2. 'कार्य' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: कार्य शारीरिक या मानसिक परिश्रम द्वारा किया जाने वाला सवैतनिक या अवैतनिक प्रयास है जिससे वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। आधुनिक काल में कार्य कारखानों और कार्यालयों में स्थानांतरित हो गया है, जहाँ अत्यधिक जटिल श्रम विभाजन और परस्पर निर्भरता पाई जाती है।

प्र. 3. समाजशास्त्र धर्म का अध्ययन कैसे करता है?

उत्तर: समाजशास्त्र धर्म का अध्ययन तीन तरीकों से करता है: (1) आनुभविक रूप से (धर्म के वास्तविक सामाजिक प्रभावों को देखना), (2) तुलनात्मक रूप से (सभी धर्मों को एक समान धरातल पर रखकर अध्ययन करना), और (3) अंतःसंबंधी रूप से (धर्म का परिवार, अर्थव्यवस्था और राजनीति के साथ संबंध तलाशना)।

प्र. 4. क्या सामाजिक संस्थाएँ व्यक्तियों को पूरी तरह नियंत्रित करती हैं?

उत्तर: नहीं, सामाजिक संस्थाएँ व्यक्तियों पर नियम और प्रतिबंध लगाकर उन्हें नियंत्रित तो करती हैं, लेकिन साथ ही वे अवसर और अधिकार भी देती हैं। व्यक्ति इन संस्थाओं का विरोध कर सकते हैं, सुधार आंदोलनों द्वारा इनमें बदलाव ला सकते हैं और इन्हें पुनःपरिभाषित भी कर सकते हैं।

अध्याय 4

संस्कृति तथा समाजीकरण

(Culture and Socialisation)

1. पाठ का परिचय (Introduction)

सामान्य बोलचाल में 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग बहुत सीमित अर्थों में किया जाता है—जैसे शास्त्रीय संगीत, नृत्य, चित्रकला, या किसी विशेष वर्ग की परिष्कृत रुचि और उच्च जीवन-शैली। परंतु समाजशास्त्र (Sociology) और सामाजिक मानवविज्ञान (Social Anthropology) में संस्कृति को कला तक सीमित न मानकर समाज के सभी सदस्यों द्वारा सीखे गए और साझा किए गए 'जीने के संपूर्ण तरीके' (Way of Life) के रूप में देखा जाता है।

'मानचित्र' (Map) की अवधारणा

- जिस प्रकार किसी अनजान शहर या भौगोलिक प्रदेश में भटकने से बचने और सही स्थान तक पहुँचने के लिए हमें मानचित्र (Map) की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार समाज में सही ढंग से व्यवहार करने और सामाजिक अंतःक्रिया (Social Interaction) चलाने के लिए हमें संस्कृति की आवश्यकता होती है।
- संस्कृति वह साझा ज्ञान और समझ प्रदान करती है जिसके माध्यम से हम समाज में दूसरों के हाव-भाव, शब्दों और संकेतों का सही अर्थ निकाल पाते हैं।
- संस्कृति कोई बनी-बनाई या स्थिर वस्तु नहीं है; यह लगातार बदलती रहती है। इसमें नए विचार और तकनीकें जुड़ती हैं तथा पुरानी अप्रासंगिक बातें हटती रहती हैं।

2. विविध परिवेश और विभिन्न संस्कृतियाँ (Diverse Settings and Cultures)

मनुष्यों का प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश एक जैसा नहीं होता। मनुष्य विभिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों (जैसे—पहाड़, मैदान, रेगिस्तान, घने जंगल, नदियाँ, द्वीप) और अलग-अलग सामाजिक संरचनाओं (जैसे—गाँव, कस्बे, औद्योगिक नगर) में रहते हैं।

- अनुकूलन की नीतियाँ:** विभिन्न प्राकृतिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के लिए लोग जीवन जीने की अलग-अलग पद्धतियाँ विकसित करते हैं, जिनसे विविध संस्कृतियों का जन्म होता है।
- 2004 सुनामी की केस स्टडी (Case Study):**
 - मुख्यभूमि के मछुआरे और कर्मचारी:** आधुनिक विज्ञान और तकनीक तक पहुँच होने के बावजूद सुनामी की प्राकृतिक चेतावनियों को नहीं समझ सके, जिससे भारी जान-माल का नुकसान हुआ।
 - द्वीप की आदिम जनजातियाँ (ओंगे, जारवा, शोंपेन):** इनके पास आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण नहीं थे, परंतु अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक समझ और अनुभवों के आधार पर उन्होंने समुद्र व हवा के व्यवहार को देखकर आपदा का पूर्वाभास कर लिया और ऊँचे स्थानों पर जाकर अपनी जान बचा ली।
- समाजशास्त्रीय निष्कर्ष:** केवल आधुनिक विज्ञान होने से कोई संस्कृति श्रेष्ठ और दूसरी निम्न नहीं हो जाती।

संस्कृतियों को आपस में ऊँचा या नीचा (श्रेणीबद्ध) नहीं आंका जा सकता; उन्हें केवल प्रकृति द्वारा आरोपित दबावों का सामना करने की क्षमता के आधार पर देखा जाता है।

3. संस्कृति की परिभाषा (Definitions of Culture)

समाजशास्त्रियों और मानवविज्ञानियों ने संस्कृति को अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है:

प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएँ:

1. **एडवर्ड टायलर (Edward Tylor, 1871):** "संस्कृति या सभ्यता अपने व्यापक नृजातीय अर्थ में एक जटिल समग्र है, जिसमें ज्ञान, आस्था, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा तथा मनुष्य के समाज के सदस्य होने के नाते प्राप्त अन्य क्षमताएँ तथा आदतें शामिल हैं।"
2. **ब्रोनिसला मैलिनोवस्की (Bronislaw Malinowski, 1931):** "संस्कृति में उत्तराधिकार में प्राप्त कलाकृतियाँ, वस्तुएँ, तकनीकी प्रक्रियाएँ, विचार, आदतें तथा मूल्य शामिल हैं।" (मैलिनोवस्की ने दीर्घकालिक 'क्षेत्रीय कार्य' / Fieldwork की परंपरा की नींव रखी)।
3. **क्लिफोर्ड ग्रीटज़ (Clifford Geertz, 1973):** "मानव एक ऐसा प्राणी है जो अपने स्वयं के बुने हुए महत्वाकांक्षाओं के जाल में फँसा हुआ है; मैं संस्कृति को यही जाल मानता हूँ।" इन्होंने संस्कृति को अर्थ की प्रतीकात्मक व्याख्या माना।
4. **लेसली व्हाइट (Leslie White):** "संस्कृति वस्तुनिष्ठ वास्तविकताओं को अर्थ देने वाला साधन है।" (जैसे साधारण जल को लोगों द्वारा धार्मिक आस्था के कारण 'पवित्र जल' मानना)।
5. **क्रोबर और क्लूखोहन (Kroeber & Kluckhohn, 1952) का सर्वेक्षण:** 1952 में इन्होंने संस्कृति की 100 से अधिक परिभाषाओं का विश्लेषण किया और संस्कृति के मुख्य अर्थ बताए:
 - सोचने, अनुभव करने और विश्वास करने का तरीका।
 - लोगों के जीने का संपूर्ण तरीका और सीखा हुआ व्यवहार।
 - सीखी हुई चीजों का भंडार और सामाजिक धरोहर।
 - व्यवहार को मानकीकृत और निर्देशित करने का साधन।

4. संस्कृति के आयाम (Dimensions of Culture)

संस्कृति के मुख्य रूप से तीन प्रचलित आयाम हैं: **संज्ञानात्मक, मानकीय, और भौतिक।**

1. **संज्ञानात्मक आयाम (Cognitive Dimension):** इसका संबंध समझ और संज्ञान से है। हमारे वातावरण से प्राप्त होने वाली समस्त सूचनाओं का हम कैसे उपयोग करते हैं, देखे या सुने गए व्यवहार को कैसे अर्थ प्रदान करते हैं—यह संज्ञानात्मक पक्ष तय करता है। निरक्षर समाजों में यह ज्ञान मौखिक जनश्रुतियों और याददाश्त में रहता है, जबकि साक्षर समाजों में यह किताबों और दस्तावेजों में सुरक्षित रहता है। (उदा. मोबाइल की घंटी पहचानना या किसी व्यंग्यचित्र/कार्टून का अर्थ समझना)।
2. **मानकीय आयाम (Normative Dimension):** इस आयाम में समाज के आचरण के नियम, मूल्य, लोकाचार, प्रथाएँ और कानून शामिल हैं जो विभिन्न संदर्भों में सामाजिक व्यवहार को दिशा-निर्देश देते हैं。
 - **मानदंड (Norms):** ये अस्पष्ट और अनौपचारिक नियम होते हैं (जैसे—घर में बड़ों की बात मानना, दी गई चीज के लिए आभार प्रकट करना)।

- **कानून (Laws):** ये राज्य द्वारा बनाए गए औपचारिक और स्पष्ट नियम होते हैं जिनका उल्लंघन करने पर सजा या जुर्माना हो सकता है।
 - **पियरे बोरद्यू (Pierre Bourdieu) का विचार:** फ्रेंच समाजशास्त्री बोरद्यू ने बताया कि मानदंडों में अस्पष्ट आपसी समझ होती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको कोई उपहार मिले तो तुरंत उसी तत्परता से वापसी उपहार नहीं देना चाहिए, अन्यथा लगेगा कि आप मित्रता के स्थान पर अपना ऋण चुका रहे हैं।
3. **भौतिक आयाम (Material Dimension):** इसमें वे सभी भौतिक साधन, उपकरण, तकनीकें, इमारतें, मशीनें और यातायात/संचार के साधन शामिल हैं जिनके प्रयोग से उत्पादन और दैनिक जीवन संभव होता है। (उदा. कंप्यूटर, मोबाइल, कार, इलेक्ट्रिक मोटर पंप, फर्श पर रंगोली या कोलम बनाने हेतु चावल का आटा)।

संस्कृति के तीनों आयामों में अंतर

तुलना का आधार	संज्ञानात्मक आयाम (Cognitive)	मानकीय आयाम (Normative)	भौतिक आयाम (Material)
मुख्य विषय	वातावरण से प्राप्त ज्ञान और सूचना की समझ।	आचरण, व्यवहार और नीति-नियंत्रण के नियम।	भौतिक उपकरण, तकनीक और निर्मित वस्तुएँ।
स्वरूप	अमूर्त (मानसिक प्रक्रिया/स्मृति)।	अमूर्त (सामाजिक मान्यताएँ व कानून)।	मूर्त (दिखाई देने वाले भौतिक साधन)।
मुख्य घटक	विचार, मौखिक परंपराएँ, भाषा, संज्ञान।	लोकाचार, प्रथाएँ, मानदंड, कानून, मूल्य।	मशीनें, इमारतें, वाहन, मोबाइल, औजार।
व्यावहारिक उदाहरण	कार्टून या प्रतीक का अर्थ पहचानना।	बड़ों का सम्मान करना, चोरी न करना।	इंटरनेट, बस, कंप्यूटर, ट्रैक्टर।

भौतिक संस्कृति बनाम अभौतिक संस्कृति और 'सांस्कृतिक पिछड़पन'

तुलना का आधार	भौतिक संस्कृति (Material Culture)	अभौतिक संस्कृति (Non-Material Culture)
परिभाषा	वे सभी मूर्त वस्तुएँ जिन्हें देखा और छुआ जा सकता है।	अमूर्त विचार, मूल्य, मानदंड और सामाजिक विश्वास।
परिवर्तन की गति	तकनीकी अविष्कारों के कारण अत्यधिक तीव्र होती है।	परंपराओं और पुरानी सोच के कारण धीमी होती है।
सांस्कृतिक पिछड़पन (Cultural Lag)	जब भौतिक संस्कृति (तकनीक) तेजी से आगे निकल जाती है और अभौतिक संस्कृति (मूल्य/कानून) उसके साथ तालमेल नहीं बैठा पाते, तो सांस्कृतिक पिछड़पन उत्पन्न होता है।	

मानदंड (Norms) बनाम कानून (Laws)

लक्षण	मानदंड (Norms)	कानून (Laws)
स्वरूप	अनौपचारिक और अस्पष्ट नियम।	औपचारिक, लिखित और स्पष्ट नियम।
लागू होने का क्षेत्र	विशेष परिवार, समूह या स्थानीय समुदाय तक सीमित।	संपूर्ण राज्य/देश के नागरिकों पर सार्वभौमिक रूप से लागू।
बनाने वाली संस्था	समाज, परंपराएँ और परिवार।	राज्य की सरकार, संसद और विधायिका।
उल्लंघन पर परिणाम	सामाजिक ताने, डांट, या शर्मिंदगी (अनौपचारिक)।	जुर्माना, पुलिस कार्रवाई, या जेल की सजा (औपचारिक)।

5. संस्कृति तथा पहचान (Culture and Identity)

पहचान व्यक्ति को जन्म से बनी-बनाई या केवल वरासत में नहीं मिलती, बल्कि यह समाज में दूसरों के साथ संबंधों और अपने द्वारा निभाई जाने वाली सामाजिक भूमिकाओं (Social Roles) से प्राप्त होती है।

आसान भाषा में विवरण:

- **बहुविध भूमिकाएँ:** आधुनिक समाज में एक ही व्यक्ति एक साथ कई भूमिकाएँ निभाता है—जैसे वह परिवार में बेटा या बेटी हो सकता है, स्कूल में विद्यार्थी, मैदान में खिलाड़ी और दोस्तों के बीच एक मित्र।
- **भाषा द्वारा पहचान:** अपनी भूमिकाओं को प्रभावी बनाने के लिए समूह अपनी विशेष भाषा और कूट शब्दों (Code words) का निर्माण करते हैं।
- उदाहरण के लिए, स्कूली छात्र अध्यापकों और सहपाठियों के संदर्भ में अपनी एक अलग सांकेतिक भाषा बना लेते हैं।
- इसी प्रकार, ग्रामीण क्षेत्रों में तालाब पर नहाते समय या शहरी क्षेत्रों में छतों पर कपड़े सुखाते समय एकत्र होकर महिलाएँ अपनी विशेष भाषा और निजी बातचीत का संसार बना लेती हैं, जो पुरुषों के नियंत्रण से बाहर होता है।

उप-संस्कृति (Subculture):

किसी बड़ी मुख्य संस्कृति के भीतर लोगों के ऐसे समूह की संस्कृति को उप-संस्कृति कहते हैं, जो अपनी विशेष शैली, भाषा, रुचि, पोशाक, संगीत या व्यवहार के कारण मुख्य समाज से अलग पहचान बनाती है।

- **युवा उप-संस्कृति:** सभ्रान्त (Elite) वर्ग के युवाओं और कामगार वर्ग के युवाओं की पोशाक, संगीत की पसंद और भाषा शैली अलग-अलग उप-संस्कृतियों को दर्शाती है।
- **पड़ोस के युवा क्लब:** युवा मिलकर स्पोर्ट्स क्लब या सांस्कृतिक समूह बनाते हैं। यह उप-संस्कृति उन्हें समाज में सकारात्मक पहचान और दिशा देती है।

6. नृजातिकेंद्रवाद (Ethnocentrism)

जब दो या दो से अधिक संस्कृतियाँ एक-दूसरे के संपर्क में आती हैं, तो नृजातिकेंद्रवाद की भावना जन्म लेती है।

अवधारणा एवं व्याख्या:

- **अर्थ:** नृजातिकेंद्रवाद का आशय अपनी संस्कृति के मूल्यों और मानकों को 'सर्वश्रेष्ठ' मानना तथा उनके आधार पर दूसरी संस्कृतियों के लोगों के व्यवहार, भाषा और विश्वासों को नीचा या 'हीन' समझना है।
- **औपनिवेशिक उदाहरण (मैकाले का 1835 का विवरण):** थॉमस बाबिंगटन मैकाले द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को भेजे गए शिक्षा संबंधी विवरण में नृजातिकेंद्रवाद का स्पष्ट रूप दिखता है, जब उन्होंने कहा: "हमें एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना चाहिए जो हमारे और हमारे द्वारा शासित लाखों लोगों के बीच द्विभाषियों का काम करे; ऐसे व्यक्तियों का वर्ग जो खून और रंग में भारतीय हो परंतु रुचि में, विचारों में, नैतिकता तथा प्रतिभा में अंग्रेज हो।"

नृजातिकेंद्रवाद बनाम विश्वनागरिकतावाद (Cosmopolitanism):

- विश्वनागरिकतावाद नृजातिकेंद्रवाद के विपरीत है। यह अन्य संस्कृतियों के अंतर का सम्मान करता है, उन्हें हीन मानने के बजाय उनका समावेश करता है और सांस्कृतिक लेन-देन को बढ़ावा देता है।
- आधुनिक उदाहरण: 1. **हिंग्लिश (Hinglish)**: अंग्रेजी भाषा में भारतीय शब्दों का समावेश (जैसे— Timepass, Prepone, Air-dash, Bangalored, Chaddis, Desi, Packka) जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनाया जा रहा है। 2. **बॉलीवुड संगीत**: पश्चिमी पॉप संगीत, भारतीय शास्त्रीय संगीत, गज़ल और भंगड़ा का ऐसा मिश्रण जो वैश्विक पहचान बना चुका है।

7. सांस्कृतिक परिवर्तन (Cultural Change)

किताब के अनुसार, सांस्कृतिक परिवर्तन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज अपनी संस्कृति के स्थापित प्रतिमानों, मूल्यों और व्यवहारों को बदलता है।

परिवर्तन के प्रमुख रूप एवं कारण:

- आंतरिक एवं बाहरी कारण:**
 - आंतरिक कारण:** कृषि या उत्पादन की नई पद्धतियाँ विकसित होना, जिससे खाद्यान्न उत्पादन बढ़ता है और कृषक समुदाय की जीवन-शैली बदलती है।
 - बाहरी कारण:** विदेशी आक्रमण, विजय या औपनिवेशीकरण, जिससे समाज के सांस्कृतिक आचरण में गहरे बदलाव आते हैं।
- पारिस्थितिकीय/पर्यावरणीय परिवर्तन:** जब जंगलों या प्राकृतिक संसाधनों में कमी आती है या उन पर कानूनी प्रतिबंध लगते हैं, तो वहाँ रहने वाले जनजातीय समुदायों की जीवन-शैली पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। उत्तर-पूर्वी व मध्य भारत के आदिवासियों पर यह प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।
- विकासात्मक बनाम क्रांतिकारी परिवर्तन:**
 - विकासात्मक परिवर्तन (Evolutionary Change):** जो परिवर्तन धीमी गति से और निरंतर समय के साथ आते हैं।
 - क्रांतिकारी परिवर्तन (Revolutionary Change):** जब किसी संस्कृति में अत्यधिक तीव्र गति से बदलाव आता है और उसकी मूल्य व्यवस्था बदल जाती है।
 - उदाहरण:** 1789 की फ्रांसीसी क्रांति जिसने फ्रांस की पुरानी सामंती इस्टेट व्यवस्था और राजतंत्र को नष्ट करके स्वतंत्रता, समानता और बंधुता के नए मूल्यों की स्थापना की।
- जन-माध्यमों (Mass Media) की भूमिका:** इलेक्ट्रॉनिक और मुद्रण माध्यमों के विस्तार ने विचारों का प्रसार करके सांस्कृतिक परिवर्तनों को अत्यंत तीव्र कर दिया है।

8. समाजीकरण (Socialisation)

परिचय (Introduction):

जन्म के समय नवजात शिशु अत्यंत असहाय होता है और समाज या सामाजिक व्यवहार के बारे में कुछ नहीं जानता। समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा असहाय शिशु धीरे-धीरे आत्म-जागरूक और कुशल मानव बनता है तथा

अपनी संस्कृति के तरीकों को सीखता है।

'मिदनापुर के भेड़िया-बच्चों' की घटना (1920):

- 1920 में बंगाल के मिदनापुर में भेड़ियों की गुफा से दो छोटी बच्चियाँ पाई गईं। वे इंसानों के बीच नहीं पली थीं। इसलिए वे चारों पैरों पर चलती थीं, कच्चा मांस खाती थीं, भेड़ियों की तरह गुर्राती थीं और कोई भाषा नहीं बोल सकती थीं।
- **समाजशास्त्रीय निष्कर्ष:** बिना समाजीकरण के कोई भी जैविक मनुष्य सामाजिक मानव की तरह व्यवहार नहीं कर सकता।

समाजीकरण के दो मुख्य चरण:

1. **प्रारंभिक समाजीकरण (Primary Socialisation):** यह जीवन के शुरुआती वर्षों (शैशवावस्था) में परिवार के भीतर होता है। यह सबसे महत्वपूर्ण चरण है जहाँ बच्चा भाषा, बुनियादी मूल्य और आदतें सीखता है।
2. **द्वितीयक समाजीकरण (Secondary Socialisation):** यह बाल्यावस्था से शुरू होकर जीवनभर चलता है। इसमें विद्यालय, समकक्ष समूह, मीडिया और कार्यस्थल जैसे अभिकरण शामिल होते हैं।

समाजीकरण की पारस्परिक/द्विमुखी प्रकृति:

समाजीकरण केवल एकतरफा प्रक्रिया नहीं है कि बच्चा चुपचाप सब सीख ले। बच्चे का जन्म उसके माता-पिता और दादा-दादी के जीवन को भी बदल देता है; वे भी नए-नए अनुभवों और भूमिकाओं को सीखते हैं।

समाजीकरण के अभिकरण (Agencies of Socialisation)

बच्चे का समाजीकरण जिन मुख्य संस्थाओं और समूहों द्वारा होता है, वे निम्नलिखित हैं:

1. परिवार (Family):

- यह समाजीकरण का पहला और प्राथमिक अभिकरण है।
- बच्चा अपने परिवार के सामाजिक वर्ग, जाति और धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुसार व्यावहारिक विशेषताओं को ग्रहण करता है।

2. समकक्ष समूह (Peer Group):

- समान आयु के मित्रों और साथियों का समूह।
- परिवार में माता-पिता का अधिकार और सत्ता होती है, जबकि समकक्ष समूह में **समानता** का संबंध होता है। यहाँ बच्चा स्वतंत्रता से विभिन्न सामाजिक अंतःक्रियाओं और नियमों को परखता है।

3. विद्यालय (School):

- यह एक औपचारिक संगठन है जहाँ मानकीकृत पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है।

- **अप्रत्यक्ष/गुप्त पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum):** पाठ्यपुस्तकों के अलावा विद्यालय बच्चों को अनौपचारिक रूप से भी नियम सिखाते हैं। उदाहरण के लिए—कई स्कूलों में लड़कियों से सफाई की अपेक्षा की जाती है जबकि लड़कों से नहीं।
- **एमिल दुर्खाइम का विचार:** दुर्खाइम के अनुसार शिक्षा समाज के मुख्य मूल्यों का संप्रेषण करती है और बच्चों को उनकी भावी सामाजिक व व्यावसायिक भूमिकाओं के लिए तैयार करती है।
- **माइकल ऐपल (1979) का अध्ययन:** छोटे बच्चों के स्कूल अध्ययन से पता चला कि बच्चे सीखते हैं कि "कार्य अनिवार्य है और खाली समय के क्रियाकलापों को खेल कहा जाता है।"

4. जन-माध्यम (Mass Media):

- दूरदर्शन (TV), समाचार पत्र, रेडियो और इंटरनेट दैनिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं।
- **शक्तिमान धारावाहिक घटना:** टीवी पर शक्तिमान को देखकर कुछ बच्चों ने छतों से कूदने का प्रयास किया, जिससे दुर्घटनाएँ हुईं। यह दर्शाता है कि बच्चे मीडिया से नक़ल करके सीखते हैं।
- **वैश्विक पहुँच:** भारतीय धारावाहिकों (जैसे महाभारत) और फ़िल्मों का प्रभाव नाइजीरिया, अफगानिस्तान और ब्रिटेन तक देखा गया।

अन्य समाजीकरण अभिकरण एवं 'समाजीकरण तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता'

(क) अन्य अभिकरण: कार्यस्थल (Workplace)

औद्योगिक समाजों में कार्यस्थल (आफिस/कारखाना) समाजीकरण का महत्वपूर्ण केंद्र है जहाँ व्यक्ति जीवन के बाद के वर्षों में व्यावसायिक अनुशासन, काम के नियम और नई भूमिकाएँ सीखता है।

(ख) समाजीकरण तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता (Socialisation vs Individual Freedom)

कई बार यह भ्रम होता है कि समाजीकरण के कारण समाज हमारे व्यवहार पर इतना नियंत्रण कर लेता है कि हमारी व्यक्तिगत स्वतंत्रता छीन जाती है। परंतु समाजशास्त्र इस विचार को गलत मानता है।

अंतर एवं संबंध (Differentiate):

आधार	समाजीकरण (Socialisation)	व्यक्तिगत स्वतंत्रता (Individual Freedom)
प्रकृति	समाज द्वारा सिखाए गए मूल्य, नियम और अनुरूपता।	व्यक्ति की अपनी इच्छा, पसंद और विरोध करने की क्षमता।
कार्य	व्यक्ति को समाज में रहने योग्य और कुशल बनाता है।	व्यक्ति को अपनी नई पहचान बनाने और नियमों को बदलने की क्षमता देता है।
परस्पर संबंध	समाजीकरण ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मूल है। समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान ही व्यक्ति में स्वतंत्र विचारों और कार्यों की क्षमता विकसित होती है।	

(ग) समाजीकरण का लिंगकरण (Gendering of Socialisation)

समाज लड़कों और लड़कियों का समाजीकरण अलग-अलग सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार करता है।

- कृष्ण कुमार (1986) का अध्ययन (गलियों का उपयोग):
- लड़कों के लिए गलियाँ: खड़े होकर आसपास देखने, दौड़ने, खेलने और बाइक पर करतब दिखाने का स्थान हैं।
- लड़कियों के लिए गलियाँ: केवल स्कूल से सीधे घर जाने का साधन हैं, जहाँ वे हमेशा छेड़खानी के डर से झुंड में जाती हैं।
- केस स्टडी: 'घंटी' (The Bell - गीता कृष्णकुट्टी) कहानी का विश्लेषण:
- घटना: एक लड़की दोपहर में मंदिर जाकर घंटी बजाना चाहती है।
- बड़ों का विरोध: बड़े कहते हैं कि "थंगम मंदिर के पुजारी की बेटी है, उसे घंटी छूने की अनुमति है, तुम्हें नहीं।"
- लड़की का तर्क: वह विरोध में कहती है कि "हम भगवान की नजरों में समान हैं।"
- परिणाम और सज़ा: लड़की जबरन घंटी बजा देती है। उसे मंदिर से खींचकर बाहर निकाला जाता है और रात के खाने में उसका प्रिय 'पापड़म' न देकर मौन सजा दी जाती है।
- निष्कर्ष: यह कहानी दर्शाती है कि कैसे परिवार, धर्म और लिंगगत मानक बच्चे पर नियंत्रण रखते हैं और जब बच्चा उनका विरोध करता है, तो उसे सामाजिक दंड का सामना करना पड़ता है।

11. शब्दावली (Glossary)

1. **सांस्कृतिक विकासवाद (Cultural Evolutionism):** यह संस्कृति का एक सिद्धांत है जो तर्क देता है कि प्राकृतिक प्रजातियों की तरह ही संस्कृति का विकास भी विभिन्नता और प्राकृतिक चयन द्वारा होता है।
2. **इस्टेट व्यवस्था (Estate System):** सामंतवादी यूरोप में व्यवसाय के अनुसार श्रेणी प्रदान करने की व्यवस्था (तीन इस्टेट्स: कुलीन वर्ग, पुरोहित वर्ग, और तृतीय इस्टेट)।
3. **बृहत् परंपरा (Great Tradition):** इसमें वे लिखित सांस्कृतिक विशेषताएँ या परंपराएँ शामिल हैं जो समाज के शिक्षित एवं सीखे हुए अभिजात वर्ग द्वारा व्यापक रूप से स्वीकृत होती हैं।
4. **लघु परंपरा (Little Tradition):** इसमें संस्कृति की वे मौखिक विशेषताएँ या परंपराएँ शामिल हैं जो ग्रामीण या स्थानीय स्तर पर स्वीकृत होती हैं।
5. **स्वयं की छवि (Self-Image):** दूसरों की निगाह में आपकी अपनी छवि या पहचान।
6. **सामाजिक भूमिकाएँ (Social Roles):** किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति या प्रस्थिति (Status) के साथ जुड़े अधिकार और उत्तरदायित्व।
7. **समाजीकरण (Socialisation):** वह प्रक्रिया जिसके द्वारा हम समाज का सदस्य बनना सीखते हैं।
8. **उप-संस्कृति (Subculture):** एक बड़ी संस्कृति के भीतर लोगों के ऐसे समूह की पहचान जो प्रतीकों, मूल्यों और आस्थाओं को बड़ी संस्कृति से लेकर अपने अनुसार अलग रूप में प्रदर्शित करते हैं।

अभ्यास प्रश्न और उनके विस्तृत उत्तर (Exercise Questions & Answers)

प्रश्न 1: सामाजिक विज्ञान में संस्कृति की समझ, दैनिक प्रयोग के शब्द 'संस्कृति' से कैसे भिन्न है?

उत्तर: दैनिक प्रयोग और सामाजिक विज्ञान (समाजशास्त्र) में 'संस्कृति' शब्द के अर्थ में निम्नलिखित प्रमुख अंतर हैं:

1. **दैनिक प्रयोग का अर्थ:** आम बोलचाल में संस्कृति का प्रयोग बहुत सीमित और संकीर्ण अर्थ में होता है। यह केवल शास्त्रीय संगीत, कला, नृत्य, चित्रकला या समाज के सभ्रांत वर्ग की परिष्कृत रुचि और जीवन-शैली की तरफ संकेत करता है।
2. **सामाजिक विज्ञान का अर्थ:** समाजशास्त्र में संस्कृति को किसी एक वर्ग या कला तक सीमित नहीं माना जाता, बल्कि यह समाज के सभी सदस्यों द्वारा सीखे गए और साझा किए गए 'जीने के संपूर्ण तरीके' (Way of Life) को दर्शाती है।
3. इसके अंतर्गत समाज के दैनिक व्यवहार, ज्ञान, आस्थाएँ, नैतिकता, कानून, प्रथाएँ, औजार, भाषा और भोजन करने के तरीके—सब कुछ शामिल हैं। इसमें कला के साथ-साथ आम आदमी का दैनिक जीवन भी शामिल है।

प्रश्न 2: हम कैसे दर्शा सकते हैं कि संस्कृति के विभिन्न आयाम मिलकर समग्र बनाते हैं?

उत्तर: संस्कृति के तीन प्रमुख आयाम हैं: (1) **संज्ञानात्मक**, (2) **मानकीय**, और (3) **भौतिक**। ये तीनों आयाम अलग-अलग न होकर आपस में गहराई से जुड़े हैं और मिलकर एक समग्र (Wholeness) का निर्माण करते हैं:

- **अंतर-संबंधों का उदाहरण:** * कल्पना कीजिए कि एक व्यक्ति कंप्यूटर या स्मार्टफोन (भौतिक आयाम) का प्रयोग कर रहा है।
- इस तकनीक का प्रयोग करने के लिए उसे साक्षरता, भाषा और सॉफ्टवेयर की समझ (संज्ञानात्मक आयाम)

होनी चाहिए।

- साथ ही, इंटरनेट का प्रयोग करते समय किसी की निजता का हनन न करना, साइबर कानूनों का पालन करना और शिष्टाचार बनाए रखना (मानकीय आयाम) आवश्यक है।
- **निष्कर्ष:** यदि इनमें से एक भी आयाम अनुपस्थित हो, तो सांस्कृतिक क्रिया अधूरी रह जाएगी। भौतिक उपकरण (कंप्यूटर) बिना संज्ञानात्मक ज्ञान के बेकार है, और बिना मानकीय नियमों के उसका उपयोग सामाजिक व्यवस्था को बिगाड़ सकता है। अतः तीनों आयाम मिलकर ही संस्कृति को एक एकीकृत कार्यप्रणाली बनाते हैं।

प्रश्न 3: उन दो संस्कृतियों की तुलना करें जिनसे आप परिचित हैं। क्या नृजातीय नहीं बनना कठिन नहीं है?

उत्तर:

- **दो संस्कृतियों की तुलना (शहरी आधुनिक संस्कृति बनाम ग्रामीण पारंपरिक संस्कृति):**
- **शहरी संस्कृति:** यहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता, औपचारिक संबंधों, भौतिक सुख-सुविधाओं, इंटरनेट और त्वरित जीवन-शैली को महत्व दिया जाता है।
- **ग्रामीण संस्कृति:** यहाँ सामुदायिक भावना, संयुक्त पारिवारिक मूल्यों, अनौपचारिक नातेदारी संबंधों और कृषि आधारित जीवन-शैली को महत्व दिया जाता है।
- **क्या नृजातीय (नृजातिकेंद्रवादी) न बनना कठिन है?** हाँ, नृजातिकेंद्रवादी (Ethnocentric) न बनना काफी कठिन होता है। इसका कारण यह है कि हमारा समाजीकरण बचपन से हमारी अपनी संस्कृति के मूल्यों और मानदंडों के अनुसार होता है। हम स्वाभाविक रूप से अपने सांस्कृतिक तरीकों को 'सही' और 'स्वाभाविक' मानने के आदी हो जाते हैं। जब हम किसी भिन्न संस्कृति के लोगों के खान-पान, पहनावे या पूजा-पद्धति को देखते हैं, तो बिना सोचे-समझे अपनी संस्कृति के चश्मे से उनका मूल्यांकन करने लगते हैं और उन्हें 'अजीब' या 'निम्न' मान लेते हैं। इस पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर निष्पक्ष (विश्वनागरिक) बनना समाजशास्त्रीय समझ के बिना कठिन होता है।

प्रश्न 4: सांस्कृतिक परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए दो विभिन्न उपागमों की चर्चा करें।

उत्तर: सांस्कृतिक परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए दो प्रमुख समाजशास्त्रीय उपागम निम्नलिखित हैं:

1. विकासात्मक उपागम (Evolutionary Approach):

- यह उपागम मानता है कि सांस्कृतिक परिवर्तन धीमी, क्रमिक और निरंतर गति से होता है।
- जिस प्रकार प्राकृतिक प्रजातियों का जैविक विकास धीरे-धीरे होता है, उसी प्रकार संस्कृति भी सरल अवस्था से जटिल अवस्था की ओर बदलती है। उदाहरण के लिए—संचार के साधनों का साधारण संकेतों से शुरू होकर लिखित भाषा और फिर डिजिटल मीडिया के रूप में धीरे-धीरे विकसित होना।

2. क्रांतिकारी उपागम (Revolutionary Approach):

- यह उपागम मानता है कि सांस्कृतिक परिवर्तन अचानक, तीव्र गति से और मूल संरचनात्मक बदलावों के रूप में आता है।
- जब किसी समाज में राजनीतिक आंदोलनों, नई तकनीकों या पारिस्थितिकीय रूपांतरण के कारण पुरानी मूल्य-व्यवस्था पूरी तरह नष्ट हो जाती है और नए मूल्य स्थापित होते हैं, तो इसे क्रांतिकारी परिवर्तन कहते हैं।

- **उदाहरण: 1789 की फ्रांसीसी क्रांति**, जिसने सामंती इस्टेट व्यवस्था को रातों-रात समाप्त करके समानता, स्वतंत्रता और बंधुता के नए मूल्यों को स्थापित किया।

प्रश्न 5: क्या विश्वव्यापीकरण को आप आधुनिकता से जोड़ते हैं? नृजातीयता का प्रेक्षण करें तथा उदाहरण दें।

उत्तर:

- **विश्वव्यापीकरण और आधुनिकता का संबंध:** हाँ, विश्वव्यापीकरण (Globalization) को आधुनिकता से सीधे जोड़ा जा सकता है। आधुनिकता के साथ संचार साधनों, इंटरनेट, यातायात और बाजार का तेजी से विस्तार हुआ है, जिसने विश्व भर की संस्कृतियों के बीच की दूरियों को मिटा दिया है।
- **नृजातीयता (Ethnocentrism) का प्रेक्षण और उदाहरण:** विश्वव्यापीकरण के दौर में जहाँ एक तरफ विभिन्न संस्कृतियाँ करीब आ रही हैं, वहीं दूसरी तरफ नृजातीयता की भावना भी देखने को मिलती है। शक्तिशाली पश्चिमी देश अपनी संस्कृति, भाषा (अंग्रेजी), खान-पान (फास्ट फूड) और जीवन-शैली को पूरे विश्व में 'आधुनिक और श्रेष्ठ' मानकर लादने का प्रयास करते हैं, जबकि अन्य स्थानीय संस्कृतियों को 'पिछड़ा' मान लिया जाता है।
- **उदाहरण:** औपनिवेशिक काल में लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति (1835) इसका स्पष्ट उदाहरण थी, जहाँ उन्होंने भारतीय भाषा और ज्ञान-परंपरा को नीचा दिखाकर अंग्रेजी भाषा और संस्कृति को श्रेष्ठ बताया था। समकालीन समय में भी पश्चिमी जीवन-शैली को ही सफलता का एकमात्र मानक मानना नृजातीयता को दर्शाता है।

प्रश्न 6: आपके अनुसार आपकी पीढ़ी के लिए समाजीकरण का सबसे प्रभावी अभिकरण क्या है? यह पहले अलग कैसे था, आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तर:

- **हमारी पीढ़ी के लिए सबसे प्रभावी अभिकरण:** मेरी पीढ़ी (समकालीन युवा पीढ़ी) के लिए समाजीकरण का सबसे प्रभावी अभिकरण **जन-माध्यम (Mass Media) और डिजिटल तकनीक (इंटरनेट, सोशल मीडिया, स्मार्टफोन)** है।
 - **यह पहले से अलग कैसे है?**
1. **पहले की स्थिति:** पिछली पीढ़ियों के समय समाजीकरण के प्राथमिक और मुख्य अभिकरण **परिवार, नातेदारी और अड़ोस-पड़ोस** थे। बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी और शिक्षकों से सीधे अनौपचारिक अंतःक्रिया द्वारा समाज के नियम और मूल्य सीखते थे।
 2. **वर्तमान स्थिति:** आज डिजिटल मीडिया ने परिवार और स्कूल के प्रभाव को काफी हद तक पीछे छोड़ दिया है। बच्चे और युवा इंटरनेट, यूट्यूब, सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म के माध्यम से वैश्विक दुनिया के संपर्क में आ रहे हैं।
- **मेरा विचार:** इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं। सकारात्मक पहलू यह है कि युवाओं में सूचनाओं और ज्ञान का लोकतंत्रीकरण हुआ है; वे विश्वनागरिक बन रहे हैं। परंतु नकारात्मक पहलू यह है कि साइबर अपराध, डिजिटल लत, और अवास्तविक जीवन-शैली (जैसे शक्तिमान जैसी नक़ल की घटनाएँ) के कारण पारंपरिक पारिवारिक मूल्य और वास्तविक सामाजिक संपर्क कमजोर हो रहे हैं।

अध्याय 5

अनुसंधान पद्धतियाँ

अनुसंधान विधियाँ

- समाजशास्त्री अनुमान और सामान्य ज्ञान से परे जाकर सामाजिक वास्तविकता को समझने का प्रयास करते हैं। इसलिए, समाजशास्त्रीय व्याख्याएँ अनुभवजन्य शोध पर आधारित होती हैं। अनुभवजन्य शोध से तात्पर्य समाजशास्त्रीय अध्ययन के किसी विशेष क्षेत्र में किए गए तथ्यात्मक अन्वेषण से है।
- शोध प्रक्रिया में कई अलग-अलग चरण शामिल होते हैं, जो जांच शुरू होने से लेकर उसके निष्कर्षों के प्रकाशन और साथी सामाजिक वैज्ञानिकों के साथ साझा किए जाने तक चलते हैं।

अनुसंधान प्रक्रिया के चरण:

1. विषय का चयन और समस्या का निर्धारण:

यह इस बात से संबंधित है कि एक समाजशास्त्री क्या जानना चाहता है। चयन समाजशास्त्री की व्यक्तिगत रुचि, विषय की प्रासंगिकता और यहां तक कि उपलब्ध संसाधनों पर भी निर्भर हो सकता है। चयनित विषय को एक समस्या/पहेली/प्रश्न के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह पहेली ज्ञान या समझ में मौजूद कमी को दर्शाती है। उदाहरण के लिए, इस विषय के अंतर्गत कई शोध प्रश्न तैयार किए जा सकते हैं, जैसे कि महिलाओं की आर्थिक स्थिति पुरुषों से कितनी पिछड़ी है या क्या शिक्षा से लिंग अनुपात में सुधार होता है आदि।

2. साहित्य की समीक्षा:

इसमें समाजशास्त्री उस विषय पर उपलब्ध साहित्य से परिचित होते हैं। यह साहित्य पुस्तकों, पत्रिकाओं, अध्ययनों, समाचार पत्रों के लेखों आदि के रूप में हो सकता है। इससे शोधकर्ता को अपने शोध प्रश्नों को परिष्कृत करने और शोध प्रश्नावली एवं साक्षात्कार प्रश्नों को तैयार करने में सहायता मिलती है।

3. परिकल्पना का निर्माण:

परिकल्पना एक अनुमान है कि क्या हो रहा है। परिकल्पना साहित्य की द्वितीयक समीक्षा के आधार पर डेटा संग्रह से पहले शोध प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करती है। एकत्रित तथ्यात्मक सामग्री परिकल्पना का समर्थन या खंडन करने वाले प्रमाण प्रदान करेगी।

4. शोध पद्धति का चयन:

शोध पद्धति में से कोई एक या एक से अधिक का संयोजन उपयोग किया जा सकता है। सर्वेक्षण, अवलोकन, केस स्टडी और साक्षात्कार जैसी कई शोध पद्धतियाँ और डेटा संग्रह की तकनीकें उपलब्ध हैं।

शोध पद्धति या तकनीक का चयन कई कारकों पर निर्भर करता है: शोध प्रश्न की प्रकृति।

- शोधकर्ता के पास उपलब्ध समय और संसाधन।
- जिस समुदाय के आकार का अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- शोधकर्ताओं की अपनी-अपनी प्राथमिकताएं होती हैं; कुछ शोधकर्ता सांख्यिकीय पद्धति से अधिक सहज महसूस करते हैं, जबकि अन्य मानवशास्त्रीय पद्धति से अधिक सहज महसूस करते हैं।

5. डेटा एकत्र करना और जानकारी दर्ज करना:

एकत्र किया गया डेटा वैध और विश्वसनीय होना चाहिए। यह उस समस्या के लिए वैध होना चाहिए जिसका उत्तर शोधकर्ता खोजना चाहता है।

6. परिणाम का विश्लेषण:

इसी चरण में परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है। परिणाम के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण से लेकर विषय-वस्तु विश्लेषण तक विशिष्ट तकनीकों की आवश्यकता होती है।

7. परिणाम साझा करना:

अंतिम रिपोर्ट लिखी या प्रकाशित की जाती है और अन्य सामाजिक वैज्ञानिकों के साथ साझा की जाती है। इससे आगे के शोध के लिए नए विचार उत्पन्न होते हैं।

अनुसंधान विधियों को सूक्ष्म और वृहत्तर अनुसंधान विधियों, प्राथमिक और द्वितीयक विधियों, गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

वृहद तथा सूक्ष्म अनुसंधान:

- सूक्ष्म विधि: यह छोटे, अंतरंग परिवेश में, आमतौर पर एक ही शोधकर्ता के साथ काम करने के लिए डिज़ाइन की गई है। इसलिए साक्षात्कार और सहभागी अवलोकन को सूक्ष्म विधि माना जाता है।
- मैक्रो विधि: यह बड़ी संख्या में उत्तरदाताओं और शोधकर्ताओं को शामिल करने वाले बड़े पैमाने के अनुसंधान के लिए डिज़ाइन की गई है। सर्वेक्षण अनुसंधान 'मैक्रो' विधि का सबसे आम उदाहरण है।

प्राथमिक तथा द्वितीयक अनुसंधान:

- प्राथमिक अनुसंधान: इसका उद्देश्य नए या 'प्राथमिक' आंकड़े उत्पन्न करना है। साक्षात्कारों से प्राथमिक आंकड़े प्राप्त होते हैं।
- द्वितीयक अनुसंधान: यह 'द्वितीयक' या पहले से मौजूद डेटा (दस्तावेजों या अन्य अभिलेखों और कलाकृतियों के रूप में) पर निर्भर करता है। ऐतिहासिक पद्धतियाँ आमतौर पर अभिलेखागारों में पाई जाने वाली द्वितीयक सामग्री पर निर्भर करती हैं।

मात्रात्मक तथा गुणात्मक अनुसंधान:

- मात्रात्मक अनुसंधान: यह गणनीय या मापनीय चरों (अनुपात, औसत आदि) से संबंधित है। उदाहरण- सर्वेक्षण।
- गुणात्मक अनुसंधान: यह दृष्टिकोण, भावनाएँ, मूल्य आदि जैसी अधिक अमूर्त और मापने में कठिन घटनाओं से संबंधित है। उदाहरण: साक्षात्कार, अवलोकन, चित्रों, विज्ञापनों आदि का विषय-विश्लेषण।

सर्वेक्षण विधि:

सर्वेक्षण एक मात्रात्मक व्यापक अनुसंधान विधि है। यह किसी विषय पर एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने का प्रयास है।

- इसका उपयोग लोगों के दृष्टिकोण, विश्वास और व्यवहार के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए किया जाता है।
- इसमें अध्ययन की जा रही आबादी से मानकीकृत जानकारी का संग्रह शामिल है।
- मानकीकृत जानकारी सभी उत्तरदाताओं से एक ही क्रम में एक जैसे प्रश्न पूछकर एकत्रित की जाती है।

सर्वेक्षणों में डेटा संग्रह की मुख्य तकनीक के रूप में प्रश्नावली का उपयोग किया जाता है।

सर्वेक्षण दो प्रकार के होते हैं:

1. वर्णनात्मक सर्वेक्षण: ये किसी दी गई जनसंख्या में कुछ विशिष्ट विशेषताओं के वितरण का सटीक माप प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, आय वितरण, किसी विशेष क्षेत्र में साक्षरता का स्तर।
 2. विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण: यह विभिन्न चरों से संबंधित होता है। उदाहरण के लिए, एक शोधकर्ता समृद्धि के स्तर और लिंग अनुपात के बीच संबंध का अध्ययन करना चाह सकता है।
- सर्वेक्षण में प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित की गई जानकारी का सांख्यिकीय विश्लेषण करके नियमितता के पैटर्न का पता लगाया जाता है। इन निष्कर्षों को पाई चार्ट के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
 - सर्वेक्षण अनुसंधान आमतौर पर बड़ी टीमों द्वारा किया जाता है जिसमें अध्ययन की योजना बनाने और उसे डिजाइन करने वाले (शोधकर्ता) और उनके सहयोगी और सहायक शामिल होते हैं जो प्रश्नावली भरवा सकते हैं।
 - यदि अध्ययन की जनसंख्या बहुत बड़ी है, तो सर्वेक्षण जनसंख्या के एक प्रतिनिधि नमूने से एकत्रित जानकारी पर आधारित होगा।

नमूना चयन प्रक्रिया दो मुख्य सिद्धांतों पर निर्भर करती है:

- स्तरीकरण का सिद्धांत: किसी भी जनसंख्या के सभी प्रासंगिक उपसमूहों को नमूने में शामिल किया

जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई धर्म के प्रति दृष्टिकोण पर शोध कर रहा है, तो सभी धर्मों के सदस्यों के साथ-साथ प्रत्येक धार्मिक श्रेणी में पुरुषों और महिलाओं दोनों को शामिल करना महत्वपूर्ण होगा।

- नमूना चयन का सिद्धांत : यह है कि वास्तविक इकाई, अर्थात् गाँव, व्यक्ति, परिवार का चयन विशुद्ध रूप से संयोग के आधार पर किया जाता है। इसे यादृच्छिकीकरण कहा जाता है, जो स्वयं प्रायिकता की अवधारणा पर निर्भर करता है।

उपर्युक्त सिद्धांतों का उपयोग करके सावधानीपूर्वक चयनित छोटा नमूना ऐसा होता है कि वह अध्ययन की जा रही जनसंख्या के संपूर्ण समूह का प्रतिनिधित्व करता है। नमूने के अध्ययन से प्राप्त परिणामों को संपूर्ण जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।

सर्वेक्षण के लाभ:

यह जनसंख्या के केवल एक छोटे से हिस्से का अध्ययन करके ही बड़े जनसमूह के लिए निष्कर्षों को सामान्यीकृत करने की अनुमति देता है। इसलिए, सर्वेक्षण की सहायता से समय, प्रयास और धन के सीमित निवेश के साथ अध्ययन किया जा सकता है।

सर्वेक्षण के नुकसान:

- सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं से गहन जानकारी प्राप्त करना संभव नहीं है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक उत्तरदाता पर खर्च किया जाने वाला समय बहुत सीमित होता है।
- चूंकि सर्वेक्षण में बड़ी संख्या में जांचकर्ता शामिल होते हैं, इसलिए यह सुनिश्चित करना बहुत मुश्किल हो जाता है कि सभी उत्तरदाताओं से जटिल प्रश्न बिल्कुल एक ही तरीके से पूछे जाएं।
- सर्वेक्षण में पूछे जाने वाले प्रश्न व्यक्तिगत या संवेदनशील प्रकार के नहीं हो सकते। इसका कारण यह है कि जांचकर्ता और उत्तरदाताओं के बीच कोई दीर्घकालिक संपर्क नहीं होता है।
- सर्वेक्षण में, अवलोकन पद्धति के विपरीत, अन्वेषक के लिए यह निश्चित रूप से जानना बहुत मुश्किल होता है कि उत्तरदाता द्वारा दिया गया उत्तर सत्य है या नहीं।
- सर्वेक्षण एक ऐसी पद्धति है जो बहुत लचीली नहीं है क्योंकि एक बार प्रश्न निर्धारित हो जाने के बाद उसमें और प्रश्न नहीं जोड़े जा सकते।

किसी सर्वेक्षण की सफलता काफी हद तक एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली और अच्छी तरह से चयनित नमूने पर निर्भर करती है।

प्रश्नावली:

ये सर्वेक्षण पद्धति में प्रयुक्त तकनीकें हैं।

- प्रश्नावली से तात्पर्य पूर्वनिर्धारित प्रश्नों के एक समूह से है जो उत्तरदाताओं को मुद्रित या लिखित रूप में दिए

जाते हैं।

- इसका उद्देश्य अनुसंधान क्षेत्र से संबंधित जानकारी प्रदान करना है।
- इन प्रपत्रों को उत्तरदाता स्वयं भर सकते हैं, या शोधकर्ता को डाक द्वारा भी भेजा जा सकता है।

प्रश्नावली में दो मुख्य प्रकार के प्रश्न होते हैं।

- खुले सिरे वाले प्रश्न: इनमें उत्तरदाताओं को जानकारी भरकर या मेल द्वारा शोधकर्ता को भेजने की अनुमति होती है। सांख्यिकीय रूप से इनका विश्लेषण करना कठिन होता है। इसका लाभ यह है कि उत्तरदाता अपनी इच्छानुसार कोई भी उत्तर लिख सकते हैं।
- बंद-छोर वाले प्रश्न: यहाँ उत्तरदाताओं से दिए गए कई उत्तरों में से एक चुनने के लिए कहा जाता है। उदाहरण के लिए, क्या आपको लगता है कि शहरी भारत में जाति का महत्व है?
 - हाँ।
 - नहीं।

एक अच्छी प्रश्नावली बनाने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

- प्रश्नावली को सावधानीपूर्वक तैयार किया जाना चाहिए ताकि उसमें शोधकर्ता का पूर्वाग्रह न हो। उसमें कोई भी ऐसा प्रश्न नहीं होना चाहिए जो उत्तर को निर्देशित करे।
- प्रश्न एक दूसरे से क्रमबद्ध रूप से संबंधित होने चाहिए।
- नाम, आयु, लिंग जैसी बुनियादी जानकारी से संबंधित प्रश्न सर्वेक्षण के वास्तविक प्रश्नों से पहले पूछे जाने चाहिए।
- प्रश्न समझने में आसान और सटीक होने चाहिए।
- सभी बंद-छोर वाले प्रश्न आमतौर पर प्रश्नावली के अंत में होते हैं।
- “क्या आपको नहीं लगता कि लड़कों को घर के कामों में मदद करनी चाहिए?” जैसे भ्रामक प्रश्न पूछने से बचना चाहिए।
- प्रश्नावली में सभी प्रश्न शोध प्रश्न और उद्देश्य कथन में निर्दिष्ट क्षेत्रों से संबंधित होने चाहिए।

अवलोकन एक विधि के रूप में:

- यह डेटा संग्रह की एक ऐसी विधि है जिसमें मानव व्यवहार को नियंत्रित किए बिना, जैसा वह वास्तव में घटित होता है, उसे रिकॉर्ड किया जाता है।
- यह सहभागी अवलोकन के रूप में या गैर-सहभागी अवलोकन के रूप में हो सकता है।

गैर-सहभागी अवलोकन:

- गैर-सहभागी अवलोकन में, पर्यवेक्षक अध्ययन किए जा रहे समूह से अलग होता है, और यह जरूरी नहीं है कि

समूह को पता हो कि उनका अवलोकन किया जा रहा है।

- पर्यवेक्षक उन व्यक्तियों की गतिविधियों में भाग नहीं लेता है जिनका अवलोकन किया जा रहा है। इससे अवलोकन किए जा रहे व्यक्ति को असहज स्थिति का सामना करना पड़ सकता है और उनका व्यवहार अप्राकृतिक हो सकता है। हालांकि, गैर-सहभागी अवलोकन से पर्यवेक्षक द्वारा अपने "बाहरी" दृष्टिकोण का उपयोग करने का जोखिम कम हो जाता है।

सहभागी अवलोकन:

- यह समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र में व्यापक रूप से प्रयुक्त एक शोध पद्धति है। इसमें शोधकर्ता अध्ययन किए जा रहे समूह की गतिविधियों में भाग लेता है।
- यह एक सूक्ष्म अनुसंधान पद्धति है और इसका उपयोग छोटे समूहों या समुदायों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।
- सहभागी अवलोकन गुप्त (जहां समुदाय को यह पता नहीं होता कि उन पर नज़र रखी जा रही है) या प्रत्यक्ष (जहां एक समूह को पता होता है कि उन पर नज़र रखी जा रही है) हो सकता है।
- मालिनोव्स्की ने ट्रोब्रिएंड द्वीप समूह के अपने अध्ययन में सहभागी अवलोकन का बहुत सफलतापूर्वक उपयोग किया।
- समाजशास्त्र में, सहभागी अवलोकन का उपयोग विलियम फूट क्वाइट द्वारा दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में एक इतालवी गली-मोहल्ले के समाज (झुग्गी बस्ती) के अध्ययन में सफलतापूर्वक किया गया था।
- सहभागी अवलोकन में किए जाने वाले सर्वेक्षण के विपरीत, समाजशास्त्री या मानवविज्ञानी कई महीने - आमतौर पर लगभग एक वर्ष या कभी-कभी उससे भी अधिक - अध्ययन किए जा रहे लोगों के बीच रहकर उनमें से एक के रूप में समय बिताते हैं।
- एक गैर-स्थानीय 'बाहरी' व्यक्ति होने के नाते, मानवविज्ञानी को स्वयं को स्थानीय लोगों की संस्कृति में पूरी तरह से समाहित करना चाहिए। उन्हें उनकी भाषा सीखनी चाहिए और उनके दैनिक जीवन में भाग लेना चाहिए ताकि अध्ययन किए जा रहे समुदाय के बारे में सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया जा सके। समुदाय का सही और प्रामाणिक विवरण प्राप्त करने के लिए दुभाषियों का उपयोग करने से बचना चाहिए।
- सहभागी अवलोकन को क्षेत्र कार्य/जातीय अध्ययन भी कहा जाता है। इसका उद्देश्य किसी समुदाय के संपूर्ण जीवन शैली के बारे में जानना है।

सहभागी पर्यवेक्षक अपने समुदाय का अध्ययन कैसे करता है?:

- सामाजिक मानवविज्ञानी अध्ययन किए जा रहे समुदाय की जनगणना करके क्षेत्र कार्य शुरू करते हैं। इसमें समुदाय के सभी लोगों की विस्तृत सूची बनाना शामिल है, जिसमें लिंग, आयु वर्ग, परिवार आदि जैसी जानकारी शामिल होती है। इसके साथ ही, किसी अजनबी की उपस्थिति को उचित ठहराने के लिए गांव या बस्ती की भौतिक संरचना का मानचित्रण करने का प्रयास भी किया जा सकता है। स्पष्टीकरण ऐसा होना चाहिए कि समुदाय द्वारा सामाजिक मानवविज्ञानी को आसानी से स्वीकार कर लिया जाए।
- मानवविज्ञान शोधकर्ता द्वारा क्षेत्र कार्य के दौरान तैयार किए गए विस्तृत फील्ड नोट्स भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। ये नोट्स प्रतिदिन लिखे जाने चाहिए और इन्हें दैनिक डायरी के रूप में भी लिखा जा सकता है। अध्ययन किए

जा रहे समुदाय के बारे में गहन जानकारी प्राप्त करने के लिए, शोधकर्ता आमतौर पर अधिकांश जानकारी के लिए एक या दो व्यक्तियों पर निर्भर रहता है। ऐसे व्यक्तियों को प्रमुख सूचनादाता कहा जाता है।

- एक सफल कार्य योजना (PO) के लिए शोधकर्ता के पास अच्छे पारस्परिक कौशल होने चाहिए। शोधकर्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह जिस समुदाय का अवलोकन कर रहा है, उसकी गतिविधियों को बदलने के बजाय, उसमें घुलमिल जाए और उसका हिस्सा बन जाए।
- किसी शोधकर्ता द्वारा अध्ययन किए जाने वाले समूह द्वारा उसे स्वीकार किए जाने की संभावना काफी हद तक उस व्यक्तिगत संबंध और मित्रता पर निर्भर करती है जो शोधकर्ता समुदाय के प्रमुख व्यक्तियों के साथ विकसित करता है।

सहभागी पर्यवेक्षण के लाभ:

- यह अन्य शोध विधियों की तुलना में अधिक लचीली है। शोधकर्ता अप्रत्याशित परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाल सकता है और सामने आने वाले किसी भी सुराग का अनुसरण कर सकता है।
- यह शोधकर्ता को अपनी स्वयं की धारणा थोपने के बजाय अध्ययन किए जा रहे समूह के दृष्टिकोण से चीजों को देखने की अनुमति देता है।
- यह शोधकर्ता को सामुदायिक जीवन के उन पहलुओं में झाँकने में सक्षम बनाता है जिनके बारे में इसके सदस्य आमतौर पर गुप्त रहते हैं।
- क्योंकि शोधकर्ता लंबे समय तक क्षेत्र में पूर्णकालिक रूप से संलग्न रहता है, इसलिए एक पीओ अल्पकालिक विधियों (जैसे सर्वेक्षण) की कई त्रुटियों से बच सकता है।

सहभागी पर्यवेक्षण के नुकसान:

- सहभागी अवलोकन का उपयोग बड़े समूहों के अध्ययन के लिए नहीं किया जा सकता है।
- सहभागी अवलोकन एक शोध पद्धति के रूप में अधिक समय लेने वाली होती है।
- सहभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग करके किए गए अध्ययन के निष्कर्षों को व्यापक जनसंख्या पर लागू नहीं किया जा सकता। ये अध्ययन केवल एक विशिष्ट परिवेश में लोगों के अनुभवों का विस्तृत दस्तावेजीकरण करते हैं।
- इस बात का खतरा है कि शोधकर्ता अध्ययन किए जा रहे समुदाय के साथ अत्यधिक जुड़ जाए, जिससे वह अपना बाहरी दृष्टिकोण खो दे।
- इस पद्धति में, हम कभी भी निश्चित नहीं हो सकते कि यह किसी मानवविज्ञानी की आवाज़ है या अध्ययन किए जा रहे लोगों की। यह हमेशा संभव है कि मानवविज्ञानी सचेतन या अचेतन रूप से यह चुन रहा हो कि उसके फील्ड नोट्स में क्या लिखा जाएगा और यहाँ तक कि उसे कैसे प्रस्तुत किया जाएगा।

सर्वेक्षण और सहभागी (प्रेक्षण)अवलोकन के बीच अंतर:

सर्वे	प्रतिभागी अवलोकन
(i) यह बड़े समुदायों या समूहों का अध्ययन करता है (मैक्रो विधि)।	(i) यह छोटे समुदायों या समूहों का अध्ययन करता है (सूक्ष्म विधि)।
(ii) यह विश्लेषण की गहराई की कीमत पर व्यापक दायरे में आता है।	(ii) यह गहन विश्लेषण है
(iii) यह एक मात्रात्मक विधि है। इसके परिणामों को सामान्यीकृत किया जा सकता है।	(iii) यह एक गुणात्मक विधि है। इसके परिणामों को सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।
(iv) इसे कम समय में आयोजित किया जा सकता है	(iv) इसमें बहुत समय लगता है
(v) इसमें जांचकर्ताओं और शोधकर्ताओं का एक बड़ा समूह शामिल होता है।	(v) यह कार्य केवल मानवविज्ञानी द्वारा ही किया जाता है।
(vi) सर्वेक्षण को एक पद्धति के रूप में परंपरागत रूप से समाजशास्त्र के अनुशासन में उपयोग किया जाता रहा है।	(vi) पीओ का उद्भव सामाजिक मानवशास्त्र के क्षेत्र में हुआ। अब इसका उपयोग समाजशास्त्रीय अध्ययन में भी किया जा रहा है।
(vii) शोधकर्ताओं को अध्ययन के अधीन समूह की भाषा का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं है। वह समुदाय या स्थानीय लोगों में से किसी अन्वेषक को नियुक्त कर सकता है।	(vii) शोधकर्ता को अध्ययन के अधीन समूह की स्थानीय भाषा सीखनी होगी।
(viii) सर्वेक्षण विधि, पीओ की तुलना में उतनी लचीली नहीं है। पायलट सर्वेक्षण के बाद प्रभावली तय हो जाने पर उसमें कुछ भी बदलाव नहीं किया जा सकता है।	(viii) एक विधि के रूप में ओ अधिक लचीला है। यह शोधकर्ता को अध्ययन के विषय में परिवर्तनों को ट्रैक करने की अनुमति देता है और प्रारंभिक धारणाओं को सुधारने की अनुमति देता है।

साक्षात्कार:

- साक्षात्कार आमने-सामने की बातचीत के माध्यम से किया जाने वाला एक उद्देश्यपूर्ण संवाद है।
- साक्षात्कार के लाभ और हानियाँ:

लाभ:

- चेहरे के हाव-भाव से कुछ हद तक भावनाओं का पता चल सकता है।
- लगभग सभी सवालों के जवाब दिए जा चुके हैं।
- फर्जी पहचान संभव नहीं है।
- प्रश्नों को गंभीरता से लिया जाता है।
- सर्वमान्य विधि।

हानियाँ:

- समय लेने वाली विधि।
- महँगा।
- पूर्वाग्रह और व्यक्तिपरकता का प्रभाव।
- केवल सीमित क्षेत्र और सीमित संख्या में लोगों को ही कवर किया जा सकता है।

साक्षात्कारों के प्रकार

- स्ट्रक्चर्ड
- असंरचित
- इसका उपयोग पूरक आहार के रूप में किया जाता है।

समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठता और व्यक्तिपरकता:

वस्तुनिष्ठता:

ज्ञान तथ्यों को उनके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत करता है (अनुभवजन्य)। वस्तुनिष्ठता का अर्थ है निष्पक्ष, तटस्थ या केवल तथ्यों पर आधारित जानकारी। इसका अर्थ है किसी विषय के बारे में भावनाओं और पूर्वाग्रहों को अनदेखा करना।

व्यक्तिपरकता:

ज्ञान तथ्यात्मक नहीं होता। यह व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और पक्षपातों से प्रभावित होता है। व्यक्तिपरकता का अर्थ है वह चीज़ जो किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और पक्षपातों पर आधारित हो। यह व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवों और समाज में उसकी विशिष्ट स्थिति पर आधारित होती है। सामान्य ज्ञान पर आधारित अवलोकन व्यक्तिपरक होते हैं।

सभी विज्ञान, चाहे वे प्राकृतिक हों या सामाजिक, वस्तुनिष्ठ होने का प्रयास करते हैं, अर्थात् तथ्यों पर आधारित निष्पक्ष ज्ञान उत्पन्न करने का।

- सामाजिक विज्ञान का अध्ययन करते समय निष्पक्ष रहना कठिन होता है, क्योंकि आप सजीव और चिंतनशील प्राणियों का अध्ययन कर रहे होते हैं जिनके बारे में आपकी पहले से ही कुछ राय होती है। भले ही आप अपने पूर्वाग्रहों से ऊपर उठने का प्रयास करें, वे आमतौर पर आपके शोध को प्रभावित करते हैं।
- लेकिन यदि आप जानते हैं कि आप जो कर रहे हैं वह आत्म-चिंतनशील है और आप अपने परिणामों के माध्यम से निष्कर्ष निकाल सकते हैं, तो आप निष्पक्ष हो सकते हैं।

सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता को स्वीकार करना प्राकृतिक विज्ञानों की तुलना में अधिक कठिन है। इसके कारण निम्नलिखित हैं:

- जबकि प्रकृति वैज्ञानिक और भूविज्ञानी प्रकृति का अध्ययन करते हैं, जो वे स्वयं नहीं हैं, वहीं समाजशास्त्री उस सामाजिक जगत का अध्ययन करते हैं जिसका वे हिस्सा हैं। इसी कारण समाजशास्त्री अपने अध्ययन में वस्तुनिष्ठ होते हैं। सामाजिक जगत में होने के कारण समाजशास्त्री के लिए पूर्वाग्रहों और विचारों को पूरी तरह से समाप्त करना कठिन होता है, जो उनके स्वयं के सामाजिक योगदान का हिस्सा होते हैं।
उदाहरण के लिए: यदि कोई समाजशास्त्री किसी ऐसे धार्मिक समुदाय का अध्ययन कर रहा है जो उसका अपना नहीं है, तो वह अपने परिवेश में प्रचलित समुदाय के प्रति दृष्टिकोण से प्रभावित होता है।
- समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठता के साथ दूसरी समस्या यह है कि सामाजिक जगत में 'सत्य' के कई संस्करण मौजूद हैं। ये एक ही सामाजिक वास्तविकता की अलग-अलग व्याख्याएं हैं।
- समाजशास्त्रियों को वस्तुनिष्ठ होने में तीसरी कठिनाई यह है कि समाजशास्त्र 'बहु-प्रतिमानिक' है। कई समाजशास्त्रीय सिद्धांत हैं जो एक ही वास्तविकता की अलग-अलग व्याख्या करते हैं।
- समाजशास्त्री पूर्णतया वस्तुनिष्ठ धारणाओं में विश्वास नहीं करते। हालांकि, समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान के रूप में अपने द्वारा उत्पन्न ज्ञान में वस्तुनिष्ठ होने का प्रयास करता है।

महत्वपूर्ण शर्तें:

- अनुभवजन्य अनुसंधान: यह समाजशास्त्रीय अध्ययन के किसी दिए गए क्षेत्र में किए गए तथ्यात्मक अन्वेषण को संदर्भित करता है।
- परिकल्पना: एक अनुमान, एक अस्थायी उत्तर, एक शैक्षिक आकलन कि क्या हो रहा है।
- माइक्रो मेथड: इसे छोटे, अंतरंग परिवेश में काम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, आमतौर पर एक ही शोधकर्ता के साथ, उदाहरण के लिए साक्षात्कार।
- मैक्रो विधि: यह बड़ी संख्या में उत्तरदाताओं और जांचकर्ताओं को शामिल करने वाले बड़े पैमाने के अनुसंधान, जैसे सर्वेक्षण अनुसंधान, से निपटने में सक्षम है।
- सर्वेक्षण विधि: एक मात्रात्मक व्यापक अनुसंधान विधि, जो किसी विषय पर एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने का प्रयास करती है।
- प्रश्नावली: इससे तात्पर्य उत्तरदाताओं को मुद्रित या लिखित रूप में दिए गए प्रश्नों के समूह से है।
- अवलोकन विधि: व्यवस्थित डेटा संग्रह की एक विधि जिसमें मानव व्यवहार को नियंत्रित किए बिना, जैसा वह

वास्तव में घटित होता है, उसे रिकॉर्ड करना शामिल है।

- साक्षात्कार: दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत जो प्रश्न और उत्तर के मूल प्रारूप का अनुसरण करती है।
- वस्तुनिष्ठता: इसका तात्पर्य केवल तथ्यों पर आधारित निष्पक्ष, तटस्थ जानकारी से है।
- आत्मचिंतनशीलता: शोधकर्ता की स्वयं का अवलोकन और विश्लेषण करने की क्षमता को संदर्भित करता है।
- नमूना: किसी दी गई जनसंख्या का प्रतिनिधि।
- नमूना त्रुटि: सर्वेक्षण के परिणामों में उत्पन्न होने वाली अपरिहार्य त्रुटि की मात्रा।
- वंशावली: एक विस्तृत पारिवारिक वृक्ष जो पीढ़ियों के बीच पारिवारिक संबंधों को रेखांकित करता है।
- क्षेत्रीय कार्य: किसी विशेष क्षेत्र के लोगों से बातचीत करके उनके बारे में जानकारी प्राप्त करने की एक विधि।
- कार्यात्मक विधि: यह कार्यात्मक विश्लेषण को संदर्भित करता है, अर्थात् समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र का मुख्य कार्य सामाजिक वस्तुओं के योगदान की जांच करना है, जो मानव समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में योगदान करते हैं।
- प्रायिकता: किसी घटना के घटित होने की संभावना, जो किसी भी समय हो सकती है।
- केस स्टडी: किसी व्यक्ति, समूह, संस्था या संगठन का उसके गुणों के संदर्भ में गहन अध्ययन।
- मूल्य: आदर्श व्यवहार के बारे में स्थायी मान्यताएँ।
- उपकरण: वे साधन जिनके माध्यम से वैज्ञानिक स्तर पर अनुरोधित और वास्तविक जानकारी एकत्रित की जाती है, उदाहरण के लिए साक्षात्कार।
- तकनीक: अध्ययन के विषय से संबंधित जानकारी एकत्र करने की एक उपयुक्त विधि। यह सीमित है लेकिन व्यापक है, अर्थात् एक ही तकनीक के अंतर्गत अनेक विधियों का प्रयोग संभव नहीं है। तकनीक में परिवर्तन हो सकता है।
- विधि: वैज्ञानिक निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए अपनाई जाने वाली व्यवस्थित चरणों की श्रृंखला। विधियाँ व्यापक और विस्तृत होती हैं। विधियाँ अल्प और स्वतंत्र भी होती हैं।

प्रश्न उत्तर

1. वैज्ञानिक पद्धति का प्रश्न विशेषतः समाजशास्त्र में क्यों महत्वपूर्ण है?

समाजशास्त्र में मनुष्य, उसके व्यवहार और सामाजिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है। प्राकृतिक विज्ञानों (जैसे भौतिकी या रसायन विज्ञान) की तरह समाज प्रयोगशाला में नियंत्रित नहीं होता। इसलिए, सामान्य ज्ञान (Common Sense) या व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से अलग हटकर समाज का निष्पक्ष, व्यवस्थित, अनुभवजन्य और प्रमाण-आधारित अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति अनिवार्य है।

2. सामाजिक विज्ञान (विशेषकर समाजशास्त्र) में 'वस्तुनिष्ठता' के अधिक जटिल होने के क्या कारण हैं?

अन्वेषक स्वयं अध्ययन का हिस्सा है: समाजशास्त्री उसी समाज, वर्ग, जाति या संस्कृति का सदस्य होता है जिसका वह अध्ययन कर रहा होता है।

व्यक्तिगत पूर्वाग्रह: शोधकर्ता के अपने मूल्य, मान्यताएँ और अनुभव अनजाने में उसके निष्कर्षों को प्रभावित कर सकते हैं।

परिवर्तनशील मानव स्वभाव: प्राकृतिक वस्तुएँ स्थिर नियमों पर चलती हैं, जबकि मनुष्य का व्यवहार

परिस्थितिनुसार बदलता रहता है।

3. वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के लिए समाजशास्त्री की कठिनाइयाँ और प्रयत्न

कठिनाइयाँ: 'सामान्य ज्ञान' की समझ से ऊपर उठना, व्यक्तिगत पसंद-नापसंद को अलग रखना और अध्ययन किए जा रहे समूह के प्रति तटस्थ रहना।

प्रयत्न:

मानक शोध तकनीकों (मानकीकृत प्रश्नावली, सांख्यिकीय उपकरण) का उपयोग करना।

अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण और पूर्वाग्रहों के प्रति निरंतर सतर्क व आत्म-विश्लेषणात्मक (Reflexive) रहना।

साथी शोधकर्ताओं द्वारा समीक्षा (Peer Review) करवाना।

4. 'प्रतिबिंबता' (Reflexivity) का तात्पर्य और समाजशास्त्र में इसका महत्व

प्रतिबिंबता का अर्थ है शोधकर्ता द्वारा अपनी स्वयं की सामाजिक स्थिति, पूर्वाग्रहों, मूल्यों और दृष्टिकोण का लगातार आत्म-परीक्षण करना कि वे शोध प्रक्रिया को कैसे प्रभावित कर रहे हैं।

महत्व: यह समाजशास्त्री को अपने पूर्वाग्रहों को पहचानने और नियंत्रित करने में मदद करती है, जिससे शोध अधिक पारदर्शी, विश्वसनीय और वस्तुनिष्ठ बनता है।

5. सहभागी प्रेक्षण के दौरान समाजशास्त्री और मानवविज्ञानी के कार्य

शोधकर्ता उस समुदाय या समूह के बीच जाकर महीनों या वर्षों तक रहता है।

उनकी भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज और दैनिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेता है।

समुदाय के सदस्यों की आंतरिक दृष्टि (Emic perspective) से घटनाओं और सामाजिक प्रक्रियाओं का सूक्ष्म अवलोकन करता है और फील्ड नोट्स तैयार करता है।

6. सहभागी प्रेक्षण की खूबियाँ और कमियाँ

खूबियाँ:

सामाजिक जीवन की गहरी, सूक्ष्म और प्रामाणिक समझ प्राप्त होती है।

उन वास्तविक व्यवहारों का अध्ययन संभव होता है जो लोग साक्षात्कारों में छुपा सकते हैं।

कमियाँ:

समय और श्रम अधिक लगता है।

अध्ययन छोटे समूह तक सीमित रहता है, इसलिए निष्कर्षों का व्यापक सामान्यीकरण (Generalization) कठिन होता है।

शोधकर्ता का समूह के साथ अत्यधिक भावनात्मक जुड़ाव वस्तुनिष्ठता को प्रभावित कर सकता है।

7. सर्वेक्षण पद्धति के आधारभूत तत्व और प्रमुख लाभ

आधारभूत तत्व: संरचित प्रश्नावली या अनुसूची (Questionnaire/Schedule), प्रतिदर्श (Sample) का चयन, और मानकीकृत डेटा संग्रह।

प्रमुख लाभ:

बड़ी जनसंख्या से कम समय और संसाधन में डेटा एकत्रित किया जा सकता है।

निष्कर्षों का व्यापक स्तर पर सामान्यीकरण संभव होता है तथा सांख्यिकीय तुलना आसान होती है।

8. प्रतिदर्श प्रतिनिधित्व (Sample Selection) चयन के आधार

संभाव्यता या यादृच्छिक चयन (Random Sampling): जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को चुने जाने का समान अवसर देना।

स्तरीकृत प्रतिदर्श (Stratified Sampling): समग्र जनसंख्या को लिंग, जाति, आय, आयु या क्षेत्र जैसे वर्गों में बांटकर प्रत्येक वर्ग से आनुपातिक नमूना लेना।

उद्देश्यपूर्ण या कोटा प्रतिदर्श (Purposive/Quota Sampling): शोध के विशिष्ट उद्देश्यों के आधार पर निश्चित संख्या में इकाइयों का चयन करना।

9. सर्वेक्षण पद्धति की कुछ कमजोरियाँ

सतही जानकारी प्राप्त होती है; मानवीय भावनाओं और गहरी सामाजिक जटिलताओं को पकड़ना मुश्किल होता है।

प्रश्न पहले से तय और बंद होते हैं, जिससे उत्तरदाता को खुलकर अपनी बात रखने का अवसर नहीं मिलता।

कई बार उत्तरदाता गलत, भ्रामक या सामाजिक रूप से 'स्वीकार्य' उत्तर दे देते हैं।

10. अनुसंधान पद्धति के रूप में साक्षात्कार के प्रमुख लक्षण

प्रत्यक्ष संवाद: शोधकर्ता और उत्तरदाता के बीच आमने-सामने (या मौखिक) बातचीत।

लचीलापन: असंरचित या अर्ध-संरचित साक्षात्कार में स्थिति के अनुसार नए प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

गहराई से जानकारी: अशाब्दिक संकेतों (बॉडी लैंग्वेज, हाव-भाव) का अवलोकन और उत्तरों का गहराई से स्पष्टीकरण (Probing) संभव होता है।